आज़ादी का अमृत महोत्सव
1947-2022

सामाजिक विज्ञान

अभ्यास पुस्तिका

वेद-भूषण - I वर्ष / प्रथमा - I वर्ष / कक्षा छठीं

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड

(शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा स्थापित एवं मान्यता प्राप्त)

उपह्वरेगिरीणाꣳसङ्गमेचनदीनाम् ॥ धियाविप्प्रोऽअजायत॥
दिवस्तारयन्ति सप्त सूर्यस्य रश्मयः।
एको अन्यच्चकृषे विश्वमानुषक्।
आयङ्गौ॒ पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः॒ ॥
तेजः पृथिव्यामधि यत्सम्बभूव।
त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ।
अप्सु ते जन्म दिवि ते सधस्थम्।

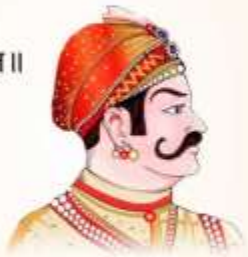

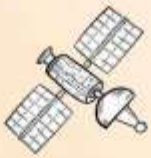

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)
(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)
Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in

विषयानुक्रमणिका

क्रम संख्या	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
	भूगोल	
अध्याय–1	हमारा सौरमण्डल	3-6
अध्याय–2	प्रतिदर्श एवं मानचित्र (ग्लोब)	7-8
अध्याय–3	पृथिवी की गतियाँ एवं परिमण्डल	9-11
अध्याय–4	भारत का भौगोलिक स्वरूप, वन एवं वन्यजीव	12-13
	इतिहास	
अध्याय– 5	इतिहास : आधार एवं प्रमाण	14-16
अध्याय– 6	भारत में प्रागैतिहासिक काल	17-18
अध्याय– 7	भारत में धातु कालीन संस्कृतियाँ	19-20
अध्याय– 8	वैदिक संस्कृति और महाजनपद काल	21-26
अध्याय– 9	प्राचीन भारतीय राजवंश एवं साम्राज्य	27-30
अध्याय–10	भारत- एक पारम्परिक समझ	31-34
	नागरिक जीवन	
अध्याय–11	सरकार एवं लोकतन्त्र	35-36
अध्याय–12	पञ्चायती राज व्यवस्था	37-38
अध्याय–13	ग्रामीण एवं नगरीय प्रशासन तथा आजीविका के साधन	39-43
अध्याय14-	भारत में विविधता	44-45
	परिशिष्ट	46-47

अध्याय- 1

हमारा सौरमण्डल

- असंख्य खगोलीय पिण्डों से युक्त अनन्त आकाश को ब्रह्माण्ड कहते हैं।
- आकाश में सूर्यास्त के पश्चात् अगणित बिन्दुओं की भाँति धुँधले या चमकते हुए दिखाई देने वाले पिण्डों को आकाशीय या खगोलीय पिण्ड कहते हैं।
- ज्ञान के प्राचीनतम स्रोत वैदिक वाङ्मय में ब्रह्माण्ड के विस्तृत स्वरूप का उल्लेख हुआ है- **सप्त दिशो नाना सूर्या:** (ऋ. 9.114.3) अर्थात् सातों दिशाओं में अनेक सूर्य विद्यमान हैं।
- **सोमापूषणा जननना रयीणां जननना दिवो जननना पृथिव्या:। जातौ विश्वस्य भुवनस्य गोपौ॥** (ऋ. 2. 40. 1) अर्थात् सोम और पूषा से ही द्यूलोक और पृथिवी उत्पन्न हुई है। सोम और पूषा देवता सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की रक्षा करते हैं।
- आकाश में जल प्रवाह की भाँति दिखने वाले अनन्त तारा समूहों को आकाश गङ्गा कहते हैं। अनुमानतः ब्रह्माण्ड में लगभग एक सौ अरब आकाश गङ्गाएँ हैं। प्रत्येक आकाश गङ्गा में एक सौ अरब या उससे भी अधिक तारे, तारा समूह और सौरमण्डल ब्रह्माण्ड में व्याप्त हैं।
- जिस आकाश गङ्गा का सदस्य हमारा सौरमण्डल है, उसे मन्दाकिनी, देवनदी, स्वर्ण गङ्गा, नागवीथी आदि नामों से भी जाना जाता है।
- हमारे सौरमण्डल का निर्माण सूर्य, पृथिवी सहित आठ ग्रह, उपग्रह, क्षुद्रग्रहों, पुच्छल तारें और उल्का पिण्डों से मिलकर हुआ है।
- हमारे सौरमण्डल का मुखिया सूर्य है। यह विशाल अग्नि पिण्ड की भाँति अनन्त ऊर्जा एवं प्रकाश का स्रोत है अत: सूर्य एक तारा है। अनन्त ऊर्जा एवं गुरुत्वाकर्षण के कारण सौरमण्डल के अन्य सभी पिण्ड अपनी कक्षा में गतिशील, नियमित, नियन्त्रित और प्रकाशित हैं।
- सूर्य पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर अपने अक्ष के परित: 27 दिनों में तथा मन्दाकिनी के केन्द्र की एक परिक्रमा 251 किलोमीटर प्रति सेकेण्ड की गति से 25 करोड़ वर्ष में पूरी कर लेता है।
- सूर्य की सतह का निर्माण- हाइड्रोजन, हीलियम, लोहा, निकिल, ऑक्सीजन, सिलिकॉन, सल्फर, मैग्नीशियम, कार्बन, नियॉन, कैल्शियम एवं क्रोमियम तत्वों से मिलकर हुआ है।

- **अव दिवस्तारयन्ति सप्त सूर्यस्य रश्मय:** (अथर्व. 7.107.1) अर्थात् सूर्य की सात किरणें (सुषुम्णा, सुरादना, उदन्वसु, विश्वकर्मा, उदावसु, विश्वन्यचा और हरिकेश) आकाश से वृष्टि करती हैं। **एको अन्यत् चकृषे विश्वमानुषक्** (ऋ. 1.52.14) अर्थात् सूर्य समस्त संसार को अपने आकर्षण से अन्तरिक्ष में रोके हुए है।
- वे आकाशीय पिण्ड, जो किसी तारे के ऊर्जा और प्रकाश से ऊर्जावान और प्रकाशित होते हैं तथा उस तारे के चारों ओर परिक्रमण करते हैं, ग्रह कहलाते हैं।
- हमारे सौरमण्डल में आठ ग्रह जो सूर्य से दूरी के क्रम में इस प्रकार हैं- बुध (Mercury), शुक्र (Venus), पृथिवी (Earth), मङ्गल (Mars), बृहस्पति (Jupiter), शनि (Saturn), अरुण (Uranus) तथा वरुण (Neptune)।
- हमारे सौरमण्डल का सबसे छोटा तथा सूर्य के सबसे निकट का ग्रह बुध अपनी कक्षा में सूर्य की एक परिक्रमा लगभग 88 दिनों में तथा अपने अक्ष के परितः एक घूर्णन लगभग 59 दिनों में पूर्ण करता है।
- शुक्र ग्रह, सूर्य की एक परिक्रमा 224.7 दिनों तथा अपने अक्ष के परितः एक घूर्णन 243 दिनों में पूरी करता है। इसे **भोर और साँझ का तारा** तथा **पृथिवी की जुडवा बहन** भी कहा जाता है।
- सूर्य से दूरी के क्रम में पृथिवी तीसरा ग्रह है। इसका व्यास 12,742 किलोमीटर है। रेडियोधर्मी डेटिंग के अनुसार पृथिवी की आयु लगभग 4.54 बिलियन वर्ष है।
- सूर्य से पृथिवी की दूरी लगभग 15 करोड़ 19 लाख 30 हजार किलोमीटर है। सूर्य के प्रकाश को पृथिवी पर पहुँचने में लगभग 8.3 मिनट का समय लगता है। इस बात की पुष्टि प्राचीन भारतीय खगोलशास्त्री आर्यभट्ट ने भी की है।
- **आयं गौ: पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुर:** (अथर्व 20.48.4 एवं यजु. 3.6) अर्थात् नाना वर्णों वाली पृथिवी सूर्य की परिक्रमा करती हुई अन्तरिक्ष में रहती है।
- सूर्य से दूरी के क्रम में चौथा ग्रह मङ्गल है। इसे लाल रङ्ग का ग्रह भी कहते हैं। यह अपने अक्ष के परितः एक घूर्णन लगभग 24 घण्टे में तथा अपनी कक्षा में सूर्य की एक परिक्रमा 687 दिनों में पूरी करता है। इस ग्रह के दो उपग्रह- फोबोस एवं डिमोस हैं। मङ्गल ग्रह का सबसे ऊँचा पर्वत निक्स ओलम्पिया है।
- विश्व के अनेक देशों ने मङ्गल ग्रह पर जीवन की तलाश के लिए अनेक अभियान चलाये इसी कड़ी में भारत ने मार्श आर्बिटर मिशन नाम से 5 नवम्बर, सन् 2013 को प्रारम्भ किया था। 24 सितम्बर, सन् 2014 को अपना यान मङ्गल पर उतारकर अपने प्रथम प्रयास में ही सफलता प्राप्त की थी।

- बृहस्पति सूर्य से दूरी के क्रम में पाँचवाँ एवं सौरमण्डल का सबसे बड़ा ग्रह है। इस ग्रह के 79 उपग्रह हैं इसे लघु सौर-तन्त्र भी कहा जाता है। इस ग्रह का **गैनिमीड** नामक उपग्रह हमारे सौरमण्डल का सबसे बड़ा उपग्रह है।
- बृहस्पति अपने अक्ष के परितः एक घूर्णन लगभग 9 घण्टे 56 मिनट में तथा अपनी कक्षा में सूर्य की एक परिक्रमा लगभग 11 वर्ष 9 माह में पूर्ण करता है।
- सूर्य से दूरी के क्रम में हमारे सौरमण्डल का छठा ग्रह शनि है। यह अपने अक्ष के परितः एक घूर्णन 10 घण्टे 40 मिनट में तथा सूर्य की एक परिक्रमा 29 वर्ष 5 माह में पूरी करता है। इस ग्रह की विशेषता यह है कि इसके चारों ओर विकसित सात वलय (अर्थात् कंगनाकृति घेरा) है। शनि के कुल 62 उपग्रह हैं। टिटान इसका सबसे बड़ा उपग्रह है।
- सूर्य से दूरी के क्रम में सातवाँ ग्रह अरुण है। यह अपने अक्ष पर अधिकतम लम्बवत स्थित होने के कारण इसे लेटा हुआ ग्रह भी कहा जाता है।
- अरुण 17 घण्टे 14 मिनट में अपने अक्ष के परितः एक घूर्णन तथा अपनी कक्षा में पूर्व से पश्चिम की ओर सूर्य की एक परिक्रमा 84 वर्षों में पूरी करता है। इस ग्रह के कुल ज्ञात उपग्रह 27 हैं। इस ग्रह की खोज मार्च 1781 में William Herschel ने की थी।
- वरुण, सूर्य से दूरी के क्रम में आठवाँ ग्रह है, जो अपने अक्ष पर एक घूर्णन लगभग 16 घण्टे 7 मिनट सूर्य की एक परिक्रमा लगभग 165 वर्षों में पूरी करता है। इस ग्रह के कुल 13 उपग्रह हैं।
- वे आकाशीय पिण्ड है, जो अपने-अपने ग्रह पिण्डों की परिक्रमा करते हैं उपग्रह कहलाते हैं। उपग्रह दो प्रकार के होते हैं- 1. प्राकृतिक 2. कृत्रिम उपग्रह।
- वे आकाशीय पिण्ड जो सौरमण्डल में विशिष्ट अन्तरिक्षीय घटनाओं के परिणामस्वरूप उसके उपांग बने उन्हें प्राकृतिक उपग्रह कहते हैं। चन्द्रमा, डिमोस, फोबोस, गैनिमीड आदि प्राकृतिक उपग्रह हैं।
- पृथिवी से अन्तरिक्ष में प्रक्षेपित कर पृथिवी की कक्षा में स्थापित किये गये वे मानव निर्मित उपकरण, जो पृथिवी की निश्चित कक्षा में परिक्रमा करते हैं, कृत्रिम उपग्रह कहलाते हैं। भारत ने अपना पहला कृत्रिम उपग्रह 19 अप्रैल,1975 में आर्यभट्ट नाम से प्रक्षेपित किया था।
- आकाश में रात्रि के प्रकाश पुञ्ज तीव्रगति से पृथिवी की ओर आते दिखाई देता है एवं शीघ्र ही लुप्त हो जाता है, इसे ही उल्का (Meteor) कहते हैं। वास्तव में ये लघु आकाशीय पिण्ड होते हैं। वे पिण्ड जो

धरती पर गिर जाते हैं, उन्हें **उल्कापिण्ड** कहा जाता है। जब ये पिण्ड अन्तरिक्ष से बड़ी मात्रा में पृथिवी की ओर आते हैं, तो इसे **उल्कापात** कहते हैं।

- जब एक ग्रह नक्षत्र की किसी दूसरे ग्रह नक्षत्र पर किसी तीसरे ग्रह नक्षत्र के प्रभाव के कारण पड़ने वाली छाया या प्रकाएश अवरोध की स्थिति को **ग्रहण** कहते हैं।
- पृथिवी से दृश्यमान दो ग्रहण हैं- 1. सूर्य ग्रहण 2. चन्द्र ग्रहण। एक वर्ष में अधिकतम सात ग्रहण होते हैं- पाँच सूर्य ग्रहण एवं दो चन्द्र ग्रहण हो सकते हैं।
- जब सूर्य, चन्द्रमा और पृथिवी एक सरल रेखा में आ जाते हैं जो सूर्यग्रहण होता है। एक वर्ष में अधिकतम पाँच बार एवं न्यूनतम दो सूर्य ग्रहण होते हैं।
- जब परिभ्रमण काल में सूर्य और चन्द्रमा के मध्य में पृथिवी एक सरल रेखा बनाती है, तो सूर्य का प्रकाश पृथिवी के कारण चन्द्रमा पर पूर्णतः नहीं पड़ता है, तो चन्द्र ग्रहण होता है।
- ग्रहण एक अद्भुत खगोलीय घटना है। हमारे वाङ्मय में इसे विशिष्ट स्थान प्राप्त है। आज यह प्रमाणित हो चुका है कि, ग्रहण काल में सूर्य एवं चन्द्र से प्रस्फुटित होने वाली जीवनदायी प्राकृतिक शक्तियाँ प्रभावित होती हैं। उनका व्यापक प्रभाव पृथिवी और उस पर रहने वाले समस्त जीव एवं वनस्पतियों पर पड़ता है।हमारे शास्त्रों में ग्रहण काल के बुरे प्रभावों से बचने के लिए स्नान-ध्यान-दान एवं ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए ईश्वरस्मरण, मन्त्रजाप, हवन जैसे उपाय बताये गये हैं। हमें इन उपायों को सद्भाव एवं विवेकपूर्ण ढंग से पालन करना चाहिए।

अध्याय- 2

प्रतिदर्श (ग्लोब) एवं मानचित्र

- पृथिवी के भौतिक स्वरूप का अध्ययन करने के लिए उसके सूक्ष्म रूप का प्रयोग किया जाता है, जिसे प्रतिदर्श (ग्लोब) कहते हैं।
- ग्लोब का आविष्कार 1492 ईस्वी में जर्मन भूगोलवेत्ता 'मार्टिन बेहैम' ने किया था।
- पृथिवी का प्रतिदर्श एक स्टैण्ड पर पीछे की ओर झुका हुआ एक कील के सहारे टिका होता है, जिसे अक्ष कहते हैं।
- हमारी पृथिवी भी अपने अक्ष पर परिक्रमण तल से $66\ ½^0$ का कोण बनाते हुए झुकी हुई है और यह पश्चिम से पूर्व की ओर घूम रही है। ग्लोब में स्थित वे दो बिन्दु जहाँ से होकर सूई गुजरती है, इन दोनों को क्रमश: ऊपरी को उत्तरी ध्रुव और निचले भाग को दक्षिणी ध्रुव कहते हैं।
- पृथिवी पर समय वातावरण आदि का ज्ञान करने के लिए ग्लोब पर दो प्रकार की काल्पनिक रेखाएँ प्रदर्शित की जाती हैं- अक्षांश और देशान्तर रेखा।
- ग्लोब पर दर्शाई गई, पश्चिम से पूर्व की ओर जाती हुई काल्पनिक रेखा को **अक्षांश रेखा** कहते है। विषुवत् वृत्त (00), उत्तर ध्रुव रेखा, दक्षिण ध्रुव रेखा, कर्क रेखा, मकर रेखा आदि अक्षांश रेखाएँ हैं।
- ग्लोब में प्रदर्शित पृथिवी के उत्तरीध्रुव को दक्षिणीध्रुव से जोड़ने वाली रेखा को **देशान्तर रेखा** कहते हैं। किसी स्थान की दूरी एवं समय को मापने के लिए यह बहुत महत्त्वपूर्ण रेखा है।
- कर्क रेखा उत्तरी गोलार्द्ध में भूमध्य रेखा के समानान्तर $23^0\ 26'\ 22''$ ग्लोब पर पश्चिम से पूर्व की ओर खींची गई एक काल्पनिक रेखा है। भारत में कर्क रेखा मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, पश्चिम बङ्गाल, त्रिपुरा और मिजोरम राज्यों से गुजरती है।
- कर्क रेखा के समानान्तर दक्षिणी गोलार्द्ध में भी एक अन्य रेखा है, जिसको मकर रेखा कहते है। यह रेखा विश्व के चिली, अर्जेन्टीना, ब्राजील, नामीबिया, बोत्सवाना, दक्षिणी अफ्रीका, फ्रान्स, आस्ट्रेलिया आदि देशों से गुजरती है।

- लन्दन के ग्रीनविच (ब्रिटिश राजकीय वेधशाला) से आगे वाली देशान्तर रेखा को ही पूर्व और पश्चिम की ओर काल गणना हेतु आधार मानकर यूनिवर्सल टाइम मेरिडियन के स्थल के रूप में अपनाया गया है। इसे Greenwich Mean Time (GMT) के नाम से जाना जाता है।
- भारत में $82\ ½^0$ पू. देशान्तर के स्थानीय समय को भारत का मानक समय माना (Indian Standard Time) के नाम से जाना जाता है, जो उत्तरप्रदेश के मिर्जापुर के देशान्तर के आधार पर चलता है।
- भारत का समय ग्रीनविच समय 5.5 घण्टे आगे रहता है।
- पृथिवी अथवा उसके किसी भू–भाग, समुद्र, नदियाँ, पर्वत, देश, नगर आदि की स्थिति को मापक की सहायता से किसी समतल सतह पर अथवा कागज पर चित्रण करना मानचित्र कहलाता है।
- पृथिवी के विभिन्न स्थलों की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक आदि पक्षों की जानकारी प्रदान करता है।

अध्याय- 3

पृथिवी की गतियाँ एवं परिमण्डल

- **आयं गौ: पृश्निरक्रमीत्** (यजु. 3.6), यह नाना वर्णों वाली पृथिवी परिक्रमा (सूर्य की) करती है। प्रसिद्ध भारतीय खगोलशास्त्री आर्यभट्ट ने हजारों वर्ष पूर्व कहा था कि, पृथिवी गोल है और अपने अक्ष के परितः परिभ्रमण करते हुए सूर्य की परिक्रमा कर रही है। इस प्रकार पृथिवी की दो गतियाँ- परिभ्रमण एवं परिक्रमण हैं।
- परिभ्रमण गति पृथिवी की दैनिक गति है। पृथिवी अपने अक्ष पर $23½^0$ डिग्री झुकी हुई है और अपने अक्ष के परित: एक घूर्णन लगभग 24 घण्टे में पूरा करती है। इसी गति के कारण पृथिवी पर दिन-रात होते हैं। दिन और रात का विभाजन करने वाले वृत्त को प्रदीप्ति वृत्त कहते हैं।
- पृथिवी सूर्य की एक परिक्रमा 365 दिन 6 घण्टे ($365¼^0$) दिवसों में पूर्ण करती है। इसे पृथिवी की परिक्रमण या वार्षिक गति कहते हैं। इसी गति के कारण पृथिवी पर ऋतु परिवर्तन होते हैं।
- पृथिवी का झुकाव छ: महीने उत्तर की ओर और छ: माह दक्षिण की ओर होता है, इसे **अयन** कहा जाता है। अयन दो प्रकार के होते हैं- उत्तरायण और दक्षिणायन। पृथिवी जब सूर्य के उत्तर दिशा में होती है तो उसे उत्तरायण कहा जाता है। 14 जनवरी से 21 जून तक उत्तरायण काल कहा जाता है। पृथिवी जब सूर्य के दक्षिण दिशा में होती है तो उसे दक्षिणायन कहा जाता है। सायन पद्धति में 21 जून से 22\23 दिसम्बर तक का काल दक्षिणायन कहलाता है।
- ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जब सूर्य मकरराशि से मिथुनराशि में भ्रमण करता है तो, उसे उत्तरायण कहा जाता है। जब सूर्य कर्कराशि से धनुराशि तक भ्रमण करता है तो, उसे दक्षिणायन कहते हैं।
- प्रत्येक चौथे वर्ष (वह वर्ष जो चार से विभाजित हो) में 366 दिन होते हैं। इसे लीप वर्ष कहते हैं।
- पृथिवी का लगभग 29% भाग स्थल, 71% भाग जल से घिरा है। पृथिवी के चारों ओर वायु का (मण्डल) का आवरण है, जिसे पर्यावरण कहते हैं।
- पृथिवी पर तीन प्रमुख परिमण्डल हैं- 1. **वायुमण्डल** (Atmosphere), 2. **जलमण्डल** (Hydrosphere), 3. **स्थलमण्डल** (Earthosphere)। पृथिवी पर जल, वायु एवं स्थल भागों में विविध जीवों और उनकी प्रजातियों के निवास स्थल को **जैवमण्डल** (Biosphere) कहते है।

- पृथिवी के चारों ओर व्याप्त गैसीय आवरण को **वायुमण्डल** (Atmosphere) कहते है। वायुमण्डल का विस्तार 1600 किलोमीटर की ऊँचाई तक अनुमानित किया गया है।
- ऋग्वेद में उल्लेख है कि- **बिभ्रद् द्रापि हिरण्ययं वरुणो वस्त निर्णिजम्।** (1.25.13), आशय है कि वायुमण्डल हमारी पृथिवी और हमारे लिए सुरक्षाकवच के रूप में कार्य करता है। वायुमण्डल में ओजोन एक परत है, जिसमें ओजोन गैस सघन रूप से विद्यमान है।
- पृथिवी के विस्तृत भू-भाग में जल पाया जाता है, जिसे जलमण्डल (Hydrosphere) कहते है। पृथिवी की पूर्ण जल राशि का लगभग 97% भाग समुद्रों के रूप में स्थित है। अतः केवल 3% जल ही नदियों, तालाबों, कुँओं, भू–गर्भीय जल है।
- जल निर्माण की प्रक्रिया का उल्लेख ऋग्वेद में है- **मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम्। धियं घृताची साधन्ता॥** (**ऋ.**1.2.7) **अर्थात**, मित्र (Oxygen) एवं वरुण (Hydrogen) के मिलने और उनके मध्य विद्युतीय तरङ्ग प्रवाहित होने से जल का निर्माण होता है।
- स्थलमण्डल, पृथिवी का वह भाग है, जो सभी प्राणियों एवं वनस्पतियों को आधार एवं आश्रय प्रदान कर पोषण करता है। पृथिवी का यह भाग सबसे ठोस एवं स्थिर होता है। इस भाग में समतल मैदान, वन, स्थलाकृतियाँ, पहाड़, घाटियाँ, मरुस्थल आदि पाये जाते हैं।
- **शन्तिवा सुरभिः स्योना कीलालोध्नी पयस्वती। भूमिरधिब्रवीतु मेपृथिवी पयसा सह॥** (अथर्व.12.1.59) अर्थात् शान्तिदायिनी, गन्धवती, सुखप्रदा, बीजगर्भा, सजला, उपजाऊ एवं अन्तस्तत्त्व (रत्न, खनिज, धातु और खान आदि) से युक्त पृथिवी को मैं प्राप्त करूँ।
- पृथिवी के स्थल भाग को स्वरूप के आधार पर तीन वर्गों में विभाजित कर सकते हैं- 1. पर्वत 2. पठार 3. मैदान।
- पृथिवी के सतह की वह प्राकृतिक भू-आकृति, जिसका आधार विस्तृत एवं शिखर भाग लघु एवं सामान्य सतह से बहुत अधिक ऊपर उठा हुआ हो पर्वत कहलाता है। पर्वतों को उनके निर्माण एवं बनावट के आधार पर तीन भागों में बाँटा गया है- 1. वलित पर्वत 2. भ्रंशोत्थ पर्वत 3. ज्वालामुखी पर्वत।
- धरातल के ऐसे विशिष्ट रूप, जो सामान्य धरातल से पर्याप्त ऊँचाई लिए होते हैं साथ ही ऊपरी भाग चौड़ा और समतल हो पठार कहलाता हैं।

- ऐसे भू-क्षेत्र, जो अपेक्षाकृत समतल और निम्न क्षेत्र वाले होते हैं **मैदान** कहलाते हैं। मैदान मुख्यत: तीन प्रकार के हैं- (अ) संरचनात्मक मैदान (Structural plains) (ब) अपरदनात्मक मैदान (Erosional plains) (स) निक्षेपात्मक मैदान (Depositional plains)।
- स्थल भाग को सात महाद्वीपों में विभाजित किया गया है एशिया, यूरोप, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, आस्ट्रेलिया तथा अन्टार्कटिका महाद्वीप।
- पृथिवी पर कुल पाँच महासागर है- 1. प्रशान्त महासागर 2. अटलांटिक महासागर 3. हिन्द महासागर 4. अण्टार्कटिक महासागर 5. आर्कटिक महासागर।
- पर्यावरण में कार्बन डाईआक्साइड गैस की वृद्धि के कारण धरती का तापमान निरन्तर बढ़ रहा है जिसे **भूमण्डलीय तापन** कहते हैं।

अध्याय- 4

भारत का भौगोलिक स्वरूप, वन एवं वन्यजीव

- वैदिक वाङ्मय में भारत की भौगोलिक सीमा के उल्लेख करते हुए कहा गया है कि- **उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्। वर्षं तद् भारतं नाम, भारती यत्र सन्ततिः॥** (विष्णुपुराण 3.2.1) अर्थात् समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में जो भू-भाग स्थित है, उसका नाम भारत और उसकी संतति को भारतीय कहते हैं।
- भौगोलिक दृष्टि से वे भूखण्ड, जो तीन ओर से जल के द्वारा घिरे होते हैं वे प्रायद्वीप कहलाते हैं। अतः भारत एक प्रायद्वीप और प्राकृतिक रूप से चतुर्दिशाओं से सुरक्षित भूभाग है। इसका क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है।
- भारत, भूमध्य रेखा के उत्तर में 8^0 4′ उत्तरी अक्षांश से 37^0 6′ उत्तरी अक्षांश तक तथा 68^0 7′ पूर्वी देशान्तर से 97^0 25′ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। 23^0 30′ उत्तरी अक्षांश अर्थात् कर्क रेखा हमारे देश के लगभग मध्य से गुजरती है तथा इसे दो भागों में विभाजित करती है।
- भारत की दूरी पूर्व में किबिथु (अरुणाचल प्रदेश) से पश्चिम में सरक्रीक (गुजरात) तक लगभग 2933 किलोमीटर तथा उत्तर में इंदिरा कोल (लद्दाख) से दक्षिण में इंदिरा पाइन्ट (तमिलनाडु) तक लगभग 3214 किलोमीटर है।
- भारत के पड़ोसी देशों में पश्चिमोत्तर में पाकिस्तान, उत्तर-पश्चिम में अफगानिस्तान, उत्तर-पूर्व में चीन, नेपाल पूर्व में बांग्लादेश, म्यांमार, समुद्री सीमा के दक्षिण में श्रीलङ्का तथा दक्षिण-पश्चिम में मालदीव स्थित है। भारत प्रशासनिक दृष्टि से 28 राज्यों एवं 8 केन्द्र शासित प्रदेशों में विभक्त है।
- भारत की नई संसद निर्माण की आधारशिला 1 अक्टूबर, 2020 को रखी गई थी। इसका निर्माण केन्द्रीय विस्टा पुनर्विकास परियोजना के अन्तर्गत किया जा रहा है। इसके वास्तुकार विमल पटेल हैं।
- वायुमण्डल में दिन प्रतिदिन होने वाले परिवर्तन को मौसम कहते हैं। तापमान, वर्षा तथा सूर्य का विकिरण आदि इसके प्रमुख तत्त्व हैं। मौसम की दीर्घकालिक औसत दशाओं को जलवायु कहते हैं। भारत की जलवायु को मौसमी या मानसूनी जलवायु कहा जाता है।
- **पूर्वामनु प्रदिशं पार्थिवानाम्तुन्प्रशासत।** (ऋग्वेद 1.95.3) तथा **उत्संहायास्थाद्यतूर ररमतिः सविता देव आवात्।** (ऋग्वेद, 2.38.4) मंत्रों में संकेत है कि ऋतुओं का अधिष्ठाता सूर्य है। भारतीय परम्परानुसार छः ऋतुएँ मानी गई हैं- बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर।

- घास, लताएं, पौधों एवं वृक्षों को वनस्पति कहा जाता है। वनस्पतियों को वैदिक वाङ्मय में औषधीय गुणों से युक्त बताया गया है- **याः फलिनीर्या अफला, अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।** (ऋ.10.97.15) अर्थात् औषधियाँ फलयुक्त एवं फलरहित, पुष्पयुक्त एवं पुष्परहित होती है।
- महाभारत में कहा गया है, **सुख दुःखयोश्च ग्रहणाच्छिन्नस्य च विरोहणात्। जीवं पश्यामि वृक्षाणामचैतन्यं न विद्यते॥** अर्थात्, वृक्षों को सुख-दुख का एहसास होता है, उनमें भी वृद्धि और विकास होता है। अतः यह स्पष्ट है कि वृक्षों में चेतना होती है। आधुनिक युग में इस सिद्दान्त का प्रतिपादन महान वनस्पति शास्त्री जगदीश चन्द्र बसु ने किया। उन्होंने वृक्षों की वृद्धि नापने के लिए कैस्कोग्राफी नामक यन्त्र का आविष्कार किया था।
- पारितन्त्र, एक प्राकृतिक इकाई है, जिसमें एक क्षेत्र विशेष के सभी जीवधारी, पौधे, पशु-पक्षी और सूक्ष्म जीव भी शामिल हैं।
- प्रत्येक वर्ष अक्टूबर माह के प्रथम सप्ताह को वन्य जीव सप्ताह के रूप में मनाया जाता हैं। इसका उद्देश्य वन्य जीवों एवं उनके निवास को संरक्षित करने के लिए जन जागरुकता लाना है। भारत सरकार द्वारा बाघों के संरक्षण के लिए 7 अप्रैल, 1972 में बाघ परियोजना एवं हाथियों के संरक्षण के लिए सन् 1992 में हस्ति परियोजना प्रारम्भ किया।

अध्याय- 5

इतिहास: आधार एवं प्रमाण

- इतिहास शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के तीन शब्दों- इति+ ह+आस से मिलकर हुई है, जिसका अर्थ- ऐसा निश्चय ही था, है। इतिहास विषय के अन्तर्गत मानव के विकास क्रम में व्यक्ति, परिवार, वंश, कबीला, राजवंश, समाज, राज्य, साम्राज्य, राष्ट्र साथ ही विश्व भर में बीते हुए समय में घटित घटनाओं एवं सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं आर्थिक गतिविधियों का क्रमबद्ध एवं वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। अत: सामाजिक विज्ञान का उद्गमस्थल इतिहास है।
- किसी भी राष्ट्र को सजीव, उन्नतिशील तथा गतिशील बनाये रखने के लिए उस राष्ट्र के इतिहास का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है।
- इतिहास अध्ययन के स्रोतों को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है- (क) पुरातात्विक स्रोत (ख) साहित्यिक स्रोत (ग) विदेशी यात्रियों के विवरण।
- पुरातात्विक स्रोतों के अन्तर्गत मुख्यत: अभिलेख, सिक्के, स्मारक, चित्रकला, मोहरें एवं उत्खनन से प्राप्त अन्य सामग्रियाँ हैं। पुरातात्विक अन्वेषकों को **पुरातत्त्वविद्** कहा जाता है।
- पुरातात्विक कार्यों के लिये 1861 ई. में **भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण** (Archaeological Survey of India) की स्थापना दिल्ली में की गई। अलेक्जेण्डर कनिंघम को यहाँ का प्रथम पुरातत्त्व निरीक्षक नियुक्त किया गया।
- कठोर सतहों जैसे पत्थरों, स्तम्भों, धातु एवं मिट्टी की पट्टियों पर उत्कीर्ण किए गए प्राप्त लिखित सामग्री को अभिलेख कहते हैं, जैसे- सम्राट अशोक के अभिलेख, हाथी गुम्फा अभिलेख, प्रयाग स्तम्भ अभिलेख आदि।
- विश्व का सबसे पुराना अभिलेख मध्य एशिया के बोगजकोई नामक स्थान से 1400 ई. पू. का मिला हैं। इस अभिलेख में 'मित्र, वरूण, इन्द्र और नासत्य' देवताओं के नामों का उल्लेख है।
- हस्तलिखित पुस्तकों को पाण्डुलिपि कहा जाता है। प्राचीन पाण्डुलिपियाँ प्राय: ताड़पात्रों, भोजपत्रों पर लिखी विविध भाषाओं में प्राप्त होती हैं।

- ऐतिहासिक अध्ययन की दृष्टि से प्राचीनकाल में प्रचलित मुद्राओं का विशिष्ट महत्व है। ये मुद्रायें सोना, चाँदी, ताँबा इत्यादि मूल्यवान धातुओं से निर्मित होती थीं।
- भारतीय इतिहास के अध्ययन में स्मारकों का महत्वपूर्ण स्थान है। स्मारकों की श्रेणी में विशेष रूप से प्राचीन मन्दिरों, मूर्तियों, स्तूपों, चित्रकलाओं और मृद्भाण्डों को रखा गया है।
- दिल्ली के मेहरौली में स्थापित 7.2 मीटर ऊँचा एवं 3 टन वजनी लौहस्तम्भ है, जिसे प्रसिद्ध गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा निर्मित माना जाता है। लगभग 1500 वर्षों से भी अधिक समय से खुले आकाश में स्थापित है। यह जङ्ग रहित लौह स्तम्भ प्राचीन भारत के उन्नत धातु विज्ञान का नमूना है।
- वैदिक वाङ्मय के अन्तर्गत वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, वेदाङ्ग, स्मृति, पुराण एवं षडदर्शन ग्रन्थों को सम्मिलित किया गया है। इन ग्रन्थों में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, ज्ञान एवं विज्ञान आदि से सम्बन्धित विषयवस्तु बहुलता से प्राप्त होती है।
- वेद चार हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद साथ ही इनकी अनेक शाखाएँ भी हैं।
- ब्राह्मण ग्रन्थ भी वेदों के ही भाग हैं, जो गद्य शैली में लिखे गये हैं। प्रत्येक वेद के अलग-अलग ब्राह्मण हैं। ऐतरेय, शतपथ, गोपथ, कठ, कपिष्ठल, जैमनीय आदि प्रमुख ब्राह्मण ग्रन्थ हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों के वे भाग जिन्हें अरण्य (वन) में ऋषियों द्वारा रचा गया वे आरण्यक कहलाये। ऐतरेय, शाँङ्खायन, तैत्तिरीय, वृहदाराण्यक आदि प्रमुख आरण्यक ग्रन्थ हैं।
- उपनिषदों में प्रश्नोत्तरी माध्यम से आध्यात्म व दर्शन विषय पर चर्चा की गई है। उपनिषदों की संख्या 108 है। केन, कठ, मुण्डक, माडुक्य, छान्दोग्य एवं ईशावास्योपनिषद आदि प्रमुख उपनिषद् हैं।
- वेदार्थ ज्ञान में सहायक ग्रन्थों को वेदाङ्ग कहा जाता है। इनकी संख्या छः है- शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, एवं छन्द। प्राचीन भारत के षड आस्तिक दर्शन हैं- न्याय, सांख्य, योग, वैषेशिक, पूर्व मीमांसा एवं उत्तर मीमांसा। तीन नास्तिक दर्शन- बौद्ध, जैन और चार्वाक दर्शन हैं।
- सूत्र साहित्य में मनुष्य के कर्तव्यों, वर्णाश्रम व्यवस्था तथा सामाजिक नियमों का विवेचन है। इसके तीन भाग हैं– श्रौतसूत्र, गृहसूत्र एवं धर्मसूत्र। स्मृतियों को धर्मशास्त्र भी कहा जाता है। मनु स्मृति, बृहस्पति स्मृति एवं याज्ञवल्क्य स्मृति आदि प्रमुख स्मृति ग्रन्थ हैं।
- पुराणों में सृष्टि की रचना, प्राचीन ऋषि-मुनियों के चिन्तन, राजव्यवस्था तथा राजवंशों का विस्तृत वर्णन है। पुराणों की संख्या अठारह है- विष्णु, मत्स्य, वायु, ब्रह्माण्ड, भागवत, गरुड, स्कन्ध, वामन, लिङ्ग, ब्रह्मवैवर्त, पद्म, कूर्म, शिव, भविष्य, नारद, ब्रह्म, मार्केण्डेय तथा वराह पुराण।

- रामायण एवं महाभारत, भारत के प्राचीनतम महाकाव्य हैं। रामायण के रचनाकार महर्षि वाल्मीकि हैं। रामायण में 24 हजार श्लोक होने के कारण इसे चतुर्विंशति सहस्त्री संहिता भी कहते हैं। महाभारत के रचनाकार महर्षि वेदव्यास हैं। इसका पूर्व नाम **जयसंहिता** है। इसमें कुल 18 पर्व और एक लाख से भी अधिक श्लोक हैं।
- तमिल कवि इलाङ्गो कृत **सिलप्पिदकारम्** एवं सत्तनार कृत **मणिमेखलई** तथा दक्षिण के सङ्गम कवियों का नाम उल्लेखनीय है।
- जैन धर्म के प्रवर्तकों को तीर्थंकर कहा जाता है, जिनकी संख्या चौबीस है। जैन धर्म के अन्तिम प्रवर्तक महावीर स्वामी ने जैन धर्म के सिद्धान्तों का पुर्नप्रतिपादन एवं प्रतिष्ठित किया। जैन साहित्य प्राय: प्राकृत, अपभ्रन्श एवं संस्कृत भाषा में प्राप्त हुए हैं। जैन धर्म के प्राचीनतम साहित्य को आगम कहा जाता है, जिनकी संख्या 46 है। जैन ग्रन्थों का प्रथम बार सङ्कलन वल्लभीनगर में छठी शताब्दी ईसा पूर्व किया गया था। प्रमुख जैनग्रन्थ आचाराङ्गसूत्र, भगवतीसूत्र, परिशिष्टपर्वन एवं भद्रबाहुचरित आदि हैं।
- बौद्ध धर्म का उदय एक विचारधारा के रूप में लगभग पाँचवी-छठीं शताब्दी ईसापूर्व हुआ, जो क्रमश: लोकप्रिय होने के साथ-साथ विश्व के अनेक भागों में फैला।
- बौद्धसाहित्य के दो मुख्य अङ्ग हैं- जातक और पिटक। **जातक** कथाओं में महात्मा बुद्ध के पूर्वजन्मों का वर्णन है। पिटक साहित्य में महात्मा बुद्ध के उपदेशों का सङ्ग्रह किया गया है। इनकी संख्या तीन होने के कारण **त्रिपिटक** भी कहा जाता है– सुत्तपिटक, विनयपिटक, अभिधम्मपिटक। बौद्ध साहित्य की भाषा पालि है, आगे चलकर संस्कृत भाषा में भी अनेक रचनाएँ की गई।
- लौकिक साहित्य के अन्तर्गत पाणिनि कृत अष्टाध्यायी, कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र, विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षस, सोमदेव कृत कथासरित्सागर, क्षेमेन्द्र कृत वृहतकथामञ्जरी, पतञ्जली कृत महाभाष्य, शूद्रक कृत मृच्छकटिकम्, कल्हण कृत राजतरङ्गिणी आदि हैं।
- मेगस्थनीज की इण्डिका, प्लिनी की नेचुरल हिस्टोरिका, फाह्यान की फो-क्यों-की, तारानाथ की कंग्यूर और तंग्यूर, अलबरूनी की तहकीक-ए-हिन्द आदि विदेशी साहित्यिक स्त्रोत हैं।
- ईसा के जन्म के पूर्व के काल को ईसा पूर्व (बिफॉर क्राईस्ट) तथा ईसा के जन्मकाल और उसके आगे आज तक घटित घटना क्रमों को ईस्वी सन् (एनो डॉमिनि) कहा जाता है। वर्तमान में ए.डी. (एनो डॉमिनि) के स्थान पर सी.ई. (कॉमन एरा) तथा बी.सी. (बिफॉर क्राईस्ट) के स्थान पर बी.सी.ई. (बिफॉर कॉमन एरा) का प्रयोग किया जाने लगा है।

अध्याय- 6

भारत में प्रागैतिहासिक काल

- इतिहास अध्ययन को सरल व सुबोध बनाने के लिए तीन काल खण्डों में विभाजित किया गया है-1. प्रागैतिहासिक काल 2.आद्य ऐतिहासिक काल 3.ऐतिहासिक काल।
- मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास के आरम्भ वह काल जिसका कोई लिखित विवरण प्राप्त नहीं होता है, उसे **प्रागैतिहासिक** काल कहते हैं। प्रारम्भ में मानव पत्थर एवं पत्थरों से बने हथियारों का प्रयोग दैनिक जीवन में विविध कार्यों के लिए करता था अत: इसे **पाषाण काल** भी कहा जाता है। प्रागैतिहासिक काल को तीन भागों में बाँटा गया है-
    1. **पूर्व पाषाण काल** (Palaeolithic Age) लगभग 5 लाख से 50 हजार वर्ष ईसा पूर्व तक।
    2. **मध्य पाषाण काल** (Mesolithic Age) लगभग 50 हजार से 15 हजार वर्ष ईसा पूर्व तक।
    3. **नव पाषाण काल** (Neolithic Age) लगभग 15 हजार से 5 हजार वर्ष ईसा पूर्व तक।
- वह काल जिसमें पुरातात्विक साक्ष्यों के साथ लिखित साक्ष्य भी मिले हैं, लेकिन लिखित साक्ष्यों को अभी तक पूरा पढ़ा नहीं जा सका है, **आद्य ऐतिहासिक काल** (3000-600 वर्ष ईसा पूर्व) कहा जाता है।
- जिस काल में मानव का परिचय लेखन कला के किसी न किसी रूप से था और उसके द्वारा लिखे गये लेखों को अधिकांशत: पढ़ा भी जा चुका है, उसे **ऐतिहासिक काल** कहा जाता है। भारत में लगभग 600 ई.पू. से वर्तमान तक के काल को ऐतिहासिक काल के नाम से जाना जाता है।
- पुरास्थल उस स्थान को कहते हैं जहाँ मानव सभ्यता से सम्बन्धित विविध औजार, बर्तन और इमारतों जैसी वस्तुओं के अवशेष मिलते हैं।
- भारतीय उपमहाद्वीप में पाषाणकालीन अनेक पुरास्थलों की पहचान पुरातत्त्वविदों द्वारा की गई है। कुछ स्थानों के नाम इस प्रकार है- 1. भीमबेटका (मध्य प्रदेश) 2. हुँस्गी (कर्नाटक) 3. करनूल की गुफाएँ (आन्ध्रप्रदेश)।
- करनूल की गुफाओं में मिले राख के अवशेष से पता चलता है कि इन गुफाओं में रहने वाले लोग आग का विविध प्रयोग जैसे शीत से बचाव, भोजन पकाने, जङ्गली जानवरों से रक्षा, जङ्गलों की सफाई जैसे कार्यों के लिए करते थे।
- पाषाण कालीन गुफा भीमबेटका में गुफा की दीवारों पर अनेक रङ्ग भी भरे हुए प्राचीन चित्र प्राप्त हुए हैं। इतिहासकारों का मानना है कि, ये चित्र उस काल में किसी उत्सव विशेष पर बनाये गए होंगे।

- **नव पाषाण काल** में मानव ने बस्तियों में रहकर पारिवारिक जीवन, कृषि उत्पादन एवं संग्रह करना प्रारम्भ कर दिया था। पहिये का आविष्कार नव पाषाण कालीन मानव की एक विशिष्ट देन है।
- नव पाषाण कालीन हथियार आकार में छोटे, पैने, नुकीले, सुगठित एवं तराशे हुए होते थे। कृषि ने मानव को विचरणशील जीवन से स्थायी जीवन जीना सिखाया। इतिहासकारों की मान्यता है कि कृषि जीवन सर्वप्रथम महिलाओं ने प्रारम्भ किया होगा।
- **पूर्व पाषाण काल-** कुरनूल (आन्ध्रप्रदेश), हुँस्गी (कर्नाटक), कुलियाना (ओडिशा), डीडवाना (राजस्थान), भीमबेटका (मध्यप्रदेश), सिंघनपुर (छत्तीसगढ) आदि क्षेत्रों से पूर्व पाषाण कालीन अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- **मध्य पाषाण काल-** बागौर (राजस्थान), लंघनाज (गुजरात), सराय नहर राय, महदहा (उत्तरप्रदेश), बीरभानपुर (पश्चिमी बङ्गाल), आदमगढ़, पंचमढ़ी (मध्यप्रदेश),जलाहल्ली (कर्नाटक), टेरी (तमिलनाडु) आदि स्थानों से मध्यपाषाण कालीन अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- **नवपाषाण काल-** बुर्जहोम (कश्मीर), सिन्धु प्रदेश, मिर्जापुर बाँदा, प्रयागराज (उत्तरप्रदेश), चिराण्ड, छपरा (बिहार), रामगढ़, होशंगाबाद (मध्यप्रदेश), ब्रह्मगिरि, बेलारी, अर्काट (कर्नाटक) पश्चिमी बङ्गाल, असम आदि स्थानों से नवपाषाण कालीन अवशेष प्राप्त हुए हैं।

अध्याय-7

भारत में धातु कालीन संस्कृतियाँ

- मानव विकास यात्रा के क्रम में चलते-चलते पाषाणकाल से धातुयुग तक पहुँच गया। अब पाषाण उपकरणों का स्थान धातु उपकरणों ने लेना प्रारम्भ किया। सद्य: खोजों से स्पष्ट है कि, मानव का सर्वप्रथम परिचय ताँबा धातु से हुआ था।
- विकास क्रम में पाषाण काल के बाद ताम्रपाषाण, काँस्य एवं लौह कालीन सभ्यताओं का विकास हुआ। इसे आद्य ऐतिहासिक काल (लगभग 3300 ई.पू. से 600 ई.पू. तक) कहा गया है।
- भारत में धातु कालीन सभ्यता की दृष्टि से ताम्रपाषाण कालीन सभ्यता के रूप में मेहरगढ़ संस्कृति, काँस्य कालीन सभ्यता के रूप में सरस्वती-सिंधु संस्कृति एवं लौह कालीन सभ्यता के रूप में वैदिक संस्कृति के विकास क्रम में इतिहास आगे बढ़ा है।
- भारतीय प्रायद्वीप में ताम्र पाषाण कालीन संस्कृति के अवशेष सर्वप्रथम वर्तमान पाकिस्तान के मेहरगढ़ से प्राप्त हुए हैं, अत: इसे मेहरगढ़ संस्कृति (लगभग 7000 वर्ष ईसा पूर्व से 3300 ईसा पूर्व तक) के नाम से भी जाना जाता है। इस संस्कृति का विकास मेहरगढ़, दक्षिण-पूर्वी राजस्थान, पश्चिमी मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात तथा दक्षिण-पूर्वी भारत में हुआ था।
- मेहरगढ़ संस्कृति के समकालीन राजस्थान में बनास नदी के किनारे स्थित अहाड़ एवं गिलुण्ड, मालवा के कायथा एवं सागर जिले में स्थित ऐरण नामक स्थानों की खुदाई में ताम्रपाषाण कालीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए है।
- सरस्वती-सिन्धु और उसकी सहायक नदी घाटियों में एक नगरीय सभ्यता एवं संस्कृति विकसित होने के प्रमाण प्राप्त हुए हैं, अत: इसे सरस्वती-सिन्धु संस्कृति कहा जाता है। इस सभ्यता के अवशेष, सर्वप्रथम हड़प्पा नामक स्थान पर मिलने के कारण इसे **हड़प्पा सभ्यता** भी कहा जाता है।
- सरस्वती नदी लगभग 5000 वर्ष ईसा पूर्व आदिबद्री से निकलकर वर्तमान हरियाणा, राजस्थान एवं गुजरात प्रान्तों में प्रवाहित होती हुई अरब सागर में मिलती थी। पुरातात्त्विक खोजों में भारत में प्राचीन सभ्यता के अनेक पुरास्थल सरस्वती नदी के प्रवाह क्षेत्र में पाये गये हैं। सिन्धु नदी तो आज भी प्रवाहित है। इसके तट पर मोहनजोदड़ो, बालाकोट और चन्हुदड़ो जैसे प्रमुख पुरास्थल हैं।
- 1921 ई. में राखलदास बनर्जी ने हड़प्पा तथा 1922 ई. में दयाराम साहनी ने सिन्धु नदी के किनारे मोहनजोदड़ो नामक पुरास्थल की खुदाई प्रारम्भ करवाया था।

- अब तक सरस्वती-सिन्धु सभ्यता के लगभग 150 पुरास्थलों की खोजे जा चुके हैं। सरस्वती-सिन्धु संस्कृति के प्रमुख भारतीय पुरास्थल- कालीबङ्गा (राजस्थान), बनावली (हरियाणा), लोथल एवं धौलावीरा (गुजरात), आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश) आदि हैं।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से देखा जाए तो सरस्वती-सिन्धु सभ्यता लगभग 22,40,000 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में विकसित हुई थी।
- खुदाई में भवन एवं किले (दुर्ग), स्नानागार, अन्नागार, नालियाँ, सड़कें, आभूषण, खिलौने, मुद्राएँ, बर्तन, मृदभाण्ड, मूर्तियाँ, शिलालेख, चूडियाँ, यज्ञकुण्ड और कमण्डल आदि पुरावशेष प्राप्त हुए हैं।
- स्नानागार का आकार 54×33 मीटर है। ईंटों का आकार 30×20×10 सेन्टीमीटर होता है। विशाल अन्नागार का आकार 169×133 फीट है। गुजरात के लोथल में एक बन्दरगाह भी मिला है। इस काल के लोग सम्भवतः गेहूँ, जौ, दलहन, मटर, धान, तिल एवं सरसों की खेती करते थे। राजस्थान के कालीबङ्गा में जुते हुए खेत के साक्ष्य मिले हैं।
- समाज चार वर्गों में विभाजित था। प्रथम वर्ग में विद्वान, पुरोहित, वैद्य, ज्योतिषी। द्वितीय वर्ग में योद्धा, राजा एवं राज पदाधिकारी। तृतीय वर्ग में कृषक, व्यापारी एवं उद्योगपति। चतुर्थ वर्ग, श्रमिकों एवं सेवकों का था।
- मातृदेवी एवं पशुपतिनाथ की विशिष्ट रूप में इस काल में उपासना की जाती थी। शवों का दाह संस्कार एवं भूमि में दफन किया जाता था।
- सरस्वती-सिन्धु संस्कृति लगभग 8000 वर्ष ईसा पूर्व आरम्भ हुई थी। लगभग 4700 वर्ष ईसा पूर्व नगर स्थापित होने लगे थे। 3900 वर्ष ईसा पूर्व इस सभ्यता के नगरों का अन्त होना प्रारम्भ हो गया था। अनुमान है कि नदियाँ सूख गई होंगी। भारी पर्यावरणीय परिवर्तन के कारण ये क्षेत्र मरूस्थल में परिवर्तित हो गये होंगे। किसी महामारी या प्राकृतिक तबाही में एक बड़ी आबादी नष्ट हो गई होगी। खुदाई में प्राप्त जले एवं अधजले अनाज भयानक अग्निकाण्ड की ओर भी संकेत करते हैं।

अध्याय- 8

वैदिक संस्कृति और महाजनपद काल

- विश्व के प्राचीनतम साहित्य वैदिक वाङ्मय में जिस संस्कृति का प्रकाशन हुआ है, वह वैदिक संस्कृति कहलाती है।
- भारतीय संस्कृति का मूलाधार **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।** (ऋग्वेद 9.63.5) अर्थात "विश्व के समस्त मानव को आर्य (श्रेष्ठ, उत्तम, सुसंस्कृत और उत्कृष्ट) बनाने" तथा **वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता:** (यजुर्वेद 9.23) अर्थात् "हम पुरोहित (चिन्तक और साधक) राष्ट्र को जीवंत और जागृत बनाए रखेंगे" जैसी पवित्र लक्ष्य वाली हमारी वैदिक संस्कृति है।
- वस्तुत: वैदिक चिन्तन के मूल स्रोत वेद ब्रह्मा की वाणी से प्रकट होकर सृष्टि के प्रारम्भ में ऋषि-मनीषियों के अन्तःकरण में प्रकाशित हुए। ऋषियों की गुरु-शिष्य परम्परा द्वारा यह सुज्ञान समाज में नियम और संयम पूर्वक परिचालित होता रहा। अनुकूल परिस्थिति में इस सुज्ञान को सङ्कलित किया गया।
- भारतीय वैदिक संस्कृति का विस्तार भारत के बाहर विश्व के अनेक भागों जैसे- सीरिया, कम्बोडिया, इण्डोनेशिया, थाईलैण्ड, जावा, सुमात्रा, बोर्निया, बारवाडोस, वर्मा आदि देशों में व्याप्त रही है।
- पश्चिमी इतिहासकार वैदिक सभ्यता को लौह कालीन मानते हैं। मैक्समूलर ने वैदिक वाङ्मय को 1200 ई.पू. का तथा ए. बेबर ने वेदों का समय 1200 से 1500 ई.पू. बताया है।
- महर्षि कृष्ण द्वैपायन द्वारा वेद को चार श्रेणियों- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में विभाजित किये जाने के कारण उन्हें वेदव्यास कहा गया।
- ऋग्वेद में देवताओं (इन्द्र, वरुण, यम, तार्क्ष्य अरिष्टनेमि, द्यौ, सूर्य, चन्द्र, अग्नि, पृथिवी, पवन, वृद्धश्रवा, बृहस्पति, विश्वेदेव आदि) के स्तुति परक छंदोबद्ध मन्त्र हैं। ऋग्वेद के छंदोबद्ध मन्त्रों को ऋक् और ऋत्विक् (पुरोहित) को होता कहते हैं।
- ऋग्वेद के दो विभाग किये गये हैं- मण्डल और अष्टक क्रम। मण्डल-क्रम में 10 मण्डल, 85 अनुवाक, 1028 सूक्त तथा लगभग 10580 मंत्र हैं। अष्टक-क्रम में 8 अष्टक, 64 अध्याय तथा 2006 वर्ग हैं।
- आचार्य चरणव्यूह ने ऋग्वेद की पाँच शाखाएं बताया है- शाकल, बाष्कल, आश्वलायन, शांखायन तथा माण्डूक्यायन।

- ऋग्वेद के प्रमुख मन्त्रदृष्टा ऋषि और ऋषिकाएं- गृत्समद्, विश्वामित्र, वामदेव, अत्रि, भरद्वाज, वशिष्ठ, लोपामुद्रा, घोषा, अपाला, विश्ववरा, सिकता, शचीपौलोमी और कक्षावृत्ति प्रमुख हैं। लोपामुद्रा का विवाह ऋषि अगस्त्य से हुआ था।
- यजुर्वेद में मानव के लिए अनेक प्रकार के यज्ञ (कर्म) का प्रतिपादन किया गया है। यजुर्वेद के मन्त्र गद्य तथा पद्य दोनों विधाओं में प्राप्त हैं। इसके ऋत्विक् (पुरोहित) को अध्वर्यु कहा जाता है। महर्षि पतन्जलि ने यजुर्वेद की 101 शाखाओं का उल्लेख किया है। वर्तमान में इसकी पाँच शाखाएँ- वाजसनेय, तैत्तिरीय, कठ, कपिष्ठल और मैत्रायणी हैं।
- यजुर्वेद के दो सम्प्रदायों- आदित्य तथा ब्रह्म के आधार पर इसके दो भाग है- शुक्ल यजुर्वेद और कृष्ण यजुर्वेद।
- मन्त्रों का विशुद्ध एवं अमिश्रित रूप होने के कारण इसे शुक्ल यजुर्वेद कहा गया। शुक्ल यजुर्वेद में कुल चालीस अध्याय एवं इसकी माध्यन्दिनि शाखा में 1975 मन्त्र तथा काण्व शाखा में 2086 मन्त्र हैं।
- मन्त्र तथा ब्राह्मण का एकत्र मिश्रण होने के कारण ही इसे कृष्ण यजुर्वेद कहा गया। कृष्ण यजुर्वेद का प्रवर्तक ऋषि वैशम्पायन को माना जाता है। इसकी चार शाखाएँ- तैत्तिरीय, मैत्रायणी, काठक तथा कपिष्ठल उपलब्ध हैं। तैत्तरीय संहिता को आपस्तम्ब संहिता भी कहते हैं। इसमें कुल सात काण्ड एवं 44 अध्याय हैं।
- साम का अर्थ ऋचाओं का गान है। सामवेद को आर्चिक संहिता भी कहते हैं। आर्चिक के दो भेद है- पूर्वार्चिक और उत्तरार्चिक। इसके मन्त्रों में आरोह-अवरोह व उचित मात्राओं से युक्त सुस्वर उच्चारण का प्रयोग हुआ है।
- महर्षि पतंजलि ने महाभाष्य में सामवेद की 1000 शाखाओं का उल्लेख किया है। वर्तमान में चार शाखाएं- कौथुमीय, राणायणीय, जैमिनीय तथा शाङ्खायन प्रचलित हैं। सामवेद की कुल मंत्र संख्या 1875 है। सामवेद के ऋत्विक् (पुरोहित) को उद्गाता कहते हैं।
- ऋषि अथर्वा के नाम पर इस वेद का नाम अथर्ववेद पड़ा। अथर्ववेद के ऋत्विज को ब्रह्मा कहते हैं। अथर्ववेद में बीस काण्ड 731 सूक्त 36 प्रपाठक और 5977 मन्त्र हैं।चरणव्यूह के अनुसार अथर्ववेद की नौ शाखाएं- शौनक, पैप्पलाद, तौद, मौद, जाजल, जलद, ब्रह्मवेद, देवदर्श तथा चारणवैद्य हैं। वर्तमान में अथर्ववेद की शौनक और पैप्पलाद शाखा ही प्राप्त है।

- अथर्ववेद में आयुर्वेद और शल्यचिकित्सा, भूगोल, खगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति, समाज, कृषि, धर्म, आध्यात्म से सम्बन्धित मन्त्रों का उल्लेख हुआ है। गोपथ ब्राह्मण में सर्पवेद, पिशाचवेद, असुरवेद, इतिहासवेद, पुराणवेद एवं स्थापत्य वेद को अथर्ववेद का उपवेद कहा गया है।
- अथर्ववेद में देवताओं की स्तुति के साथ-साथ आयुर्वेद और शल्यचिकित्सा, भूगोल, खगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति, समाज, कृषि, धर्म, आध्यात्म से सम्बन्धित मन्त्रों का उल्लेख हुआ है।
- ब्राह्मण ग्रन्थों में मन्त्रों और यज्ञों की व्याख्या के साथ ही उनके विधि-विधानों का आध्यात्मिक, आधिदैविक और वैज्ञानिक स्वरूप का उल्लेख के साथ-साथ सृष्टि निर्माण, भूगोल, खगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति, समाज, कृषि, धर्म, आध्यात्म, दर्शन आदि का विशद विवेचन हुआ है। प्रमुख ब्राह्मण ग्रन्थों की संख्या चौदह हैं- 1. ऐतरेय 2. शाङ्खायन (कौषीतकि) 3. शतपथ 4. तैत्तिरीय 5. तांड्य (पंचविंश) 6. षडविंश 7. सामविधान 8. आर्षेय 9. देवता, 10. छांदोग्य मन्त्र 11. संहितोपनिषद् 12. वंश 13. जैमिनीय (तवलकार) 14. गोपथ ब्राह्मण।
- अरण्यों (वनों) के शांत तथा निर्मल वातावरण में होने वाले अध्ययन-अध्यापन, मनन, चिन्तन, शास्त्रीय चर्चा और आध्यात्मिक विवेचन के ग्रन्थों को आरण्यक कहा जाता है। आरण्यक ग्रन्थों में आत्मतत्त्व और ब्रह्मविद्या के साथ ही शरीर विद्या, उपासना, दर्शन आदि का विवेचन हुआ है।
- उपनिषद् का मुख्य अर्थ है, ज्ञान प्राप्ति के उद्देश्य से गुरु के पास जाना या समीप बैठना है। वेदों का अंतिम भाग होने के कारण उपनिषदों को वेदान्त भी कहा जाता है। आदि शङ्कराचार्य ने उपनिषद् को ब्रह्म-विद्या कहा है। मुक्तिकोपनिषद में उपनिषदों की संख्या 108 बताई गई है।
- आदि शंकराचार्य द्वारा दस उपनिषदों पर भाष्य लिखे गये हैं, जिनके नाम हैं- 1. ईश 2. केन 3. कठ 4. प्रश्न 5. मुण्ड 6. माण्डूक्य 7. तित्तिरि 8. ऐतरेय 9. छान्दोग्य 10. बृहदारण्यक।
- उपनिषदों में ब्रह्म-विद्या के साथ ही सृष्टि निर्माण, जीव, माया, विद्या, अविद्या, पुनर्जन्म, मोक्ष, कर्म, नैतिकता, ऋषिवंशपरम्परा, सुयोग्य संतान प्राप्ति के उपाय, शास्त्रार्थ, इतिहास, भूगोल, समाज, राष्ट्र आदि विषयों का विशद विवेचन प्राप्त है।
- वेदार्थ ज्ञान और व्याख्या में सहायक तथा यज्ञ में उनका विनियोग कराने वाले शास्त्रों को वेदाङ्ग कहा जाता है। वेदाङ्गों की संख्या छः है- 1. शिक्षा 2. व्याकरण 3. छन्द 4. निरुक्त 5. ज्योतिष 6. कल्प।

- स्मृति ग्रन्थों की रचना का आधार वेद हैं। इन ग्रन्थों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक नियमों के साथ ही नैतिक उपदेशों का उल्लेख हुआ है।
- मनुस्मृति, अत्रि स्मृति, विष्णु स्मृति, हारीत स्मृति, औशनस स्मृति, अंगिरा स्मृति, यम स्मृति, कात्यायन स्मृति, बृहस्पति स्मृति, पराशर स्मृति, व्यास स्मृति, दक्ष स्मृति, गौतम स्मृति, वशिष्ठ स्मृति, आपस्तम्ब स्मृति, संवर्त स्मृति, शंख स्मृति, लिखित स्मृति, देवल स्मृति, शातातप स्मृति आदि प्रमुख स्मृति ग्रन्थ हैं।
- प्राचीन आख्यानों को नये रूप में प्रस्तुत करना ही पुराणों का प्रतिपाद्य है। मत्स्य पुराण में पुराणों के पाँच लक्षण बताये गये हैं- **सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च। वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्** ॥(4364) अर्थात, सर्ग (सृष्टि), प्रतिसर्ग (प्रलय, पुनर्जन्म), वंश (देवता व ऋषि सूचियां), मन्वन्तर (चौदह मनु के काल), और वंशानुचरित (सूर्य चन्द्रादि वंशीय चरित)। पुराणों का प्रतिपाद्य विषय ब्रह्माण्डविद्या, देवी-देवताओं, राजाओं, ऋषि-मुनियों की वंशावली, लोककथाएँ, तीर्थयात्रा, मन्दिर, चिकित्सा, खगोल शास्त्र, व्याकरण, खनिज विज्ञान, हास्य, धर्मशास्त्र और दर्शन आदि हैं।
- पुराणों की संख्या अठारह है- 1. ब्रह्मपुराण 2. पद्मपुराण 3. विष्णुपुराण 4. वायुपुराण 5. भागवतपुराण 6. भविष्यपुराण 7. नारदपुराण 8. मार्कण्डेयपुराण 9. अग्निपुराण 10. ब्रह्मवैवर्तपुराण 11. लिंगपुराण 12. वाराहपुराण 13. स्कन्दपुराण 14. वामनपुराण 15. कूर्मपुराण 16. मत्स्यपुराण 17. गरुडपुराण 18. ब्रह्माण्डपुराण। इनके अतिरिक्त अठारह उपपुराण भी हैं।
- आत्मचक्षुओं द्वारा देखना या मनन करके निष्कर्ष निकालना ही दर्शन है इसलिए दर्शन से तात्पर्य तत्त्व ज्ञान से है। उपनिषद् काल में दर्शन एक पृथक शास्त्र के रूप में विकसित होने लगा था।
- भारतीय ऋषिओं द्वारा जगत के रहस्यों को अनेक दृष्टिकोणों से जानने के लिये षड आस्तिक दर्शन ग्रन्थों का उद्भव हुआ- **सांख्य दर्शन** (महर्षि कपिल), **योग दर्शन** (महर्षि पतञ्जलि), **न्याय दर्शन** (महर्षि गौतम), **वैशेषिक दर्शन** (महर्षि कणाद), **पूर्व मीमांसा दर्शन** (महर्षि जैमिनि), **उत्तर मीमांसा** (महर्षि बादरायण)। नास्तिक दर्शन के रूप में जैन, बौद्ध एवं चार्वाक दर्शन प्रसिद्ध हैं।
- भारत में वैदिक संस्कृति का विकास 'सप्तसिन्धु' क्षेत्र में हुआ। इस प्रदेश में बहने वाली सात नदियों का वर्णन ऋग्वेद में मिलता है– (1) सिन्धु (2) सरस्वती (3) शतद्रुम (सतलज) (4) विपाशा (व्यास) (5) परुष्णी (रावी) (6) वितस्ता (झेलम) (7) असिक्नी (चिनाब)।

- वैदिक संस्कृति सिन्धु से लेकर सुदूर पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी की घाटी तक तथा उत्तर में हिमालय पर्वत से लेकर दक्षिण समुद्र (हिन्द महासागर) तक पल्लवित हुई। भारत भुमि के बाहर पूर्वी देशों- थाईलैण्ड, इण्डोनेशिया, मलेशिया, बर्मा, जावा, सुमात्रा, बाली के साथ-साथ अनेक देशों में प्रचारित-प्रसारित हुई।
- प्राचीन भारतीय वैदिक समाज में वर्ण व्यवस्था गुण एवं कर्म पर आधारित होकर चतुःवर्ण- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के रूप में प्रचलित रही है।
- आश्रम व्यवस्था एक वैयक्तिक वैदिक अवधारणा है। इसके अन्तर्गत मानव जीवन को शतायु मानकर पच्चीस–पच्चीस वर्षों के चार आश्रमों में विभाजित किया गया है- ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम, सन्यासाश्रम।
- वैदिक वाङ्मय में आवास सम्बन्धी अनेक प्रसंग हैं। वेदों में कहा गया है कि घर 'यूप' अर्थात खम्भे पर टिके होते थे। इन्हें सकड़ी वाले पेड़ से बनाया जाता था। यूप ही घर को जमीन से लेकर छत तक सहारा देते थे। इसीलिए कई स्थानों पर यूप की पूजा और स्तुति के प्रसंग भी वेदों में मिलते हैं।
- वैदिक संस्कृति में अन्न, सब्जी, कन्दमूल, फल, दूध और दूध के बने पदार्थ मुख्य भोजन थे। यदा- कदा शिकार का भी प्रचलन था। किन्तु कृषि एवं पशुपालन अपनाने के बाद उस पर निर्भरता कम होती गई। शाकाहार की प्रतिष्ठा भारतीय समाज में अति प्राचीनकाल से रही है।
- प्राचीन काल में भारत में पहनावे में विविधता और मर्यादा का भाव था। स्त्री एवं पुरुषों के पहनावे अलग-अलग प्रकार के उनकी शरीर रचना, कार्य, आवश्यकता, मौसम एवं मर्यादा के अनुरूप भिन्न-भिन्न थे।
- राजनीतिक दृष्टि से **पुरु** व **भरत** कबीले मिलकर **कुरु** तथा **तुर्वशु** और **क्रिवि** कबीले मिलकर **पाञ्चाल** कहलाये।
- ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार पूर्वदेश के शासक **सम्राट**, पश्चिमके **स्वराट**, उत्तरके **विराट** तथा दक्षिण के **भोज** और मध्यदेश के शासक **राजा** की उपाधि धारण करते थे। पूर्वकाल में राजा का चुनाव जनता (विश) द्वारा, कालान्तर में जनता के प्रतिनिधियों द्वारा और अन्ततः राजा का पद वंशानुगत हो गया था। परन्तु अन्यायी राजा को प्रजा एवं ऋषि मिलकर पद से हटा भी सकते थे। राजनैतिक प्रदेश को संकेत करने वाला शब्द **राष्ट्र** का सर्वप्रथम प्रयोग वैदिक वाङ्मय में किया गया है।
- वैदिक संस्कृति एक ग्राम्य संस्कृति थी। इस काल की अर्थव्यवस्था का आधार कृषि, पशुपालन एवं विविध व्यवसाय थे। ऋग्वेद तथा अन्य वैदिक ग्रन्थों से हमें इसके प्रमाण मिलते हैं।

- वैदिक धर्म का आधार श्रेष्ठ मानव कर्म है। वैदिक देवताओं को तीन श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है- **आकाश के देवता-** सूर्य, द्यौस्, वरुण, मित्र, पूषन्, विष्णु, उषा, अपान्नपात्, सविता, त्रिप, विवस्वत्, आदित्यगण, अश्विनद्वय आदि। **अन्तरिक्ष के देवता-** इन्द्र, मरुत, रुद्र, वायु, पर्जन्य, मातरिश्वन्, आप्त्य, अज एकपाद, आप, अहिर्बुध्न्य। **पृथ्वी के देवता-** अग्नि, सोम, पृथ्वी, बृहस्पति, तथा नदियां।
- जनपद शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख **ऐतरेय** और **शतपथ** ब्राह्मण ग्रन्थों में मिलता है। वैदिक संस्कृति में परिवार से कुल का निर्माण हुआ, कुलों से ग्राम बने, ग्रामों से मिलकर जनपद बने तथा जनपदों से महाजनपद बने।
- बौद्धग्रन्थ अंगुत्तर निकाय में 6-7वी शताब्दी ईसा पूर्व में 16 महाजनपदों का उल्लेख किया गया है- अंग, अश्मक, अवन्ती, चेदि, गान्धार, काशी, कम्बोज, कोशल, कुरु, मगध, मल्ल, मत्स्य, पाञ्चाल, शूरसेन, वज्जिसंघ, वत्स।
- छठीं-सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व के महाजनपद कालीन भारत में राजतन्त्र एवं गणतन्त्र शासन प्रणाली प्रचलित थी। दोनों ही शासन प्रणालियों में ही महाजनपदों का प्रभाव विस्तार एवं विकास हुआ था।

अध्याय–9

प्राचीन भारतीय राजवंश एवं साम्राज्य

- मौर्य साम्राज्य की स्थापना लगभग 321 ई.पूर्व चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने शिक्षक एवं गुरु कौटिल्य के निर्देशन में की थी।
- कौटिल्य को इतिहास में विष्णुगुप्त एवं चाणक्य के नाम से भी जाना जाता है। इनकी विश्व प्रसिद्ध रचना अर्थशास्त्र है, जो सामाजिक, राजनीतिक, एवं आर्थिक के साथ ही प्रशासन विधि की दृष्टि से विश्व प्रसिद्ध साहित्य है।
- मौर्य साम्राज्य, मगध से प्रारम्भ होकर भारत के विस्तृत भू-भाग में फैल गया। यह तत्कालीन भारत का सबसे बड़ा और शक्तिशाली साम्राज्य था। मौर्य वंश का शासन 185 वर्ष ईसा पूर्व तक रहा।
- मौर्यवंश में राजपरम्परा पैतृक थी। अतः चन्द्रगुप्त के बाद उसका पुत्र बिन्दुसार एवं उसके बाद, उसका पुत्र अशोक सम्राट बना। आगे भी यह परम्परा चलती रही। ये तीनों सम्राट, महान प्रशासक, प्रजावत्सल एवं धर्मभीरु थे।
- मौर्य साम्राज्य में भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा भाषाई विविधता विद्यमान थी। विशाल मौर्य साम्राज्य के सुचारू सञ्चालन के लिए दो प्रकार की शासन व्यवस्था थी- केन्द्रीय (राजधानी) शासन एवं प्रान्तीय शासन।
- केन्द्रीय शासन के अन्तर्गत राजधानी और उसके आस-पास के क्षेत्र आते थे। ये क्षेत्र सीधे सम्राट द्वारा प्रशासित होते थे। राजा की राजकार्यों एवं नीति निर्धारण में मदद के लिए मन्त्रिपरिषद होती थी।
- मौर्य साम्राज्य पाँच प्रान्तों में विभक्त था। इन प्रान्तों में सम्राट द्वारा प्रशासक के रूप में राज्यपाल नियुक्त होते थे, जो प्राय: राजवंश के राजकुमार ही होते थे। जिन्हें 12000 पण (चाँदी के सिक्के) वार्षिक वेतन दिया जाता था।
- यातायात के रूप में सड़कों एवं नदी जलमार्गों का प्रयोग होता था। इन मार्गों पर सीधा मौर्य सम्राट का नियन्त्रण था। राजमार्गों पर कर लगता था।
- यूनानी राजा सेल्यूकस का राजदूत मेगस्थनीज भारत आया था। काफी समय तक सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में रहकर सम्पूर्ण भारत का भ्रमण भी किया। उसकी एक महत्त्वपूर्ण रचना 'इण्डिका' है।

- अशोक, मौर्य साम्राज्य के तीसरे महान शक्तिशाली एवं प्रतिभा सम्पन्न सम्राट थे। इनका शासनकाल लगभग 272 से 232 ईसा पूर्व तक रहा। कलिंग के युद्ध (262-261 ई.पू.) में हुए, भयानक नरसंहार ने शक्तिशाली सम्राट अशोक का हृदय परिवर्तन कर दिया और वे 'धम्म' की शरण में संकल्पबद्ध हो गये।
- अशोक ने राजदरबार में धम्म की शिक्षा देने के लिए 'धम्म महामात्य' की नियुक्ति की थी। सम्राट अशोक ने धम्म संदेशों के प्रचार-प्रसार के लिए बौद्ध संघों एवं स्तूपों का निर्माण, शिलाओं एवं स्तम्भों पर धम्म उपदेशों को उत्कीर्ण कराया। धम्म के संदेशों को विश्व में फैलाने के लिए श्रमणों को चीन, ग्रीस, मिश्र आदि देशों में भेजा एवं अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को धम्म प्रचार के लिए श्रीलङ्का भेजा।
- वर्तमान में हमारे राष्ट्रीय चिन्ह को सारनाथ के अशोक स्तम्भ से लिया गया है, जो हमारी मुद्राओं पर अंकित होता है।
- 185 ईसा पूर्व में सम्राट बृहद्रथ मौर्य की हत्या कर उनके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने शासनसत्ता अपने हाथ में ले ली। पुष्यमित्र का शासन काल लगभग 149 ई.पू. तक रहा। इन्हें वैदिक धर्म का संरक्षक भी कहा जाता है। उन्होंने अपने पुरोहित पतञ्जलि की सहायता से 2 बार अश्वमेध यज्ञ किया।
- शुंग वंश के अन्तिम उत्तराधिकारी वज्रमित्र थे, जिनका शासन लगभग 94 ई. पू. तक रहा। शुंगों के शासन क्षेत्र में मध्य गंगा की घाटी एवं चम्बल नदी तक का प्रदेश सम्मिलित थे।
- कण्व वंश की स्थापना वासुवेद ने लगभग 73 ई.पू. में की। इस वंश का शासन मात्र 45 वर्ष तक ही रहा। कण्व वंश ने वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना में भारी योगदान दिया। इस वंश के अंतिम शासक सुशर्मा की हत्या लगभग 27 ई.पू. में उसके सेनापति सिमुक ने कर इस वंश के शासन का अंत कर दिया था।
- सिमुक ने लगभग 27 ई.पू. में दक्षिण भारत के आंध्रा एवं महाराष्ट्र प्रदेशों के अधिकांश भागों को मिलाकर सातवाहन वंश के शासन की स्थापना की। सातवाहनों का शासन काल लगभग 240 ई. तक रहा। गौतमीपुत्र शातकर्णि, वशिष्ठ पुत्र पुलवामी एवं यज्ञश्री शातकर्णि आदि इस वंश के प्रमुख प्रसिद्ध शासक हुए। सातवाहन समाज मातृसत्तात्मक, भाषा प्राकृत एवं लिपि ब्राह्मी थी। सातवाहन शासकों ने सीसा, चाँदी, ताँबे के सिक्के चलाये।
- प्रथम शक शासक माउस ने पहली शताब्दी के अन्तिम चरण में काबुल, पूर्वी पञ्जाब, सिन्ध तथा गान्धार प्रदेशों पर शासन किया। इसके बाद उनके राज्य का विस्तार पञ्जाब, मथुरा, महाराष्ट्र तथा उज्जैन तक हुआ।

- महाराष्ट्र के भूमक और नहपान (119 से 124 ई.) तथा उज्जैन के चेष्टन तथा रूद्रदामन (130 से 150 ई.) प्रमुख शक्तिशाली शक क्षत्रप थे।
- पर्थियन नामों वाले कुछ शासक ईसा पूर्व पहली शती के अन्त में उत्तर-पश्चिम भारत पर शासन कर रहे थे। पह्लवों का उल्लेख महाभारत में भी हुआ है। पह्लव राजवंश का वास्तविक संस्थापक मिथ्रेडेट्स प्रथम को माना गया है। सबसे शक्तिशाली पह्लव शासक गोण्डोफर्निस (20-41 ई.) था।
- भारत में कुषाण वंश का सबसे शक्तिशाली और प्रतापी शासक कनिष्क (लगभग 78 से 106 ई. तक) था। कनिष्क के शासन काल में भारतीय कला, साहित्य एवं संस्कृति आदि का व्यापक विकास हुआ। 145 ई. के लगभग इस राजवंश का अन्त हुआ।
- कनिष्क के शासन में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन कश्मीर के कुण्डलवन में हुआ।
- रेशम के वस्त्र बनाने की तकनीकी का आविष्कार लगभग 7000 वर्ष पूर्व चीन में हुआ था। चीनी व्यापारी जिस मार्ग से रेशमी वस्त्रों का व्यापार करने जाते थे, धीरे-धीरे उन मार्गों को रेशम मार्ग के नाम से जाना जाने लगा।
- गुप्त राजवंश का संस्थापक एवं प्रथम शासक श्रीगुप्त (240–280 ईस्वी) को माना जाता है। गुप्त साम्राज्य की सीमा उत्तर में हिमालय से दक्षिण में विन्ध्य पर्वत तक एवं पूर्व में बङ्गाल से पश्चिम में अरब सागर तक विस्तृत थी। गुप्त साम्राज्य को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाता है। गुप्त साम्राज्य के महान राजाओं में चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) एवं स्कन्दगुप्त का नाम आता है।
- समुद्रगुप्त महान सेनानायक थे, जिन्हें किसी भी युद्ध में पराजय का सामना नहीं करना पड़ा। समुद्रगुप्त के सीधे नियन्त्रण में सम्पूर्ण आर्यावर्त (उत्तरापथ) था। वी. ए. स्मिथ ने समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन कहा है। प्रयाग प्रशस्ति को समुद्रगुप्त ने अपने दरबारी कवि हरिषेण द्वारा अंकित कराया था।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपनी प्रशासनिक योग्यता, वैवाहिक सम्बन्धों एवं युद्ध विजयों के द्वारा शीघ्र ही एक महान शासक के रूप में ख्याति प्राप्त कर ली थी। अपने शासनकाल में उसने इक्कीस शक राजाओं को परास्त करने के बाद विक्रमादित्य और शकारि की उपाधि धारण की और ईसा के जन्म के 57 वर्ष पूर्व विक्रम संवत् चलाया था। विश्व प्रसिद्ध महाकवि कालिदास, शंकु, अमरसिंह, वेतालभट्ट, क्षपणक, धनवन्तरि, वररूचि, वराहमिहिर और खटकरपारा सम्राट चन्द्रगुप्त के दरबार के नवरत्न थे।

- भारत का पुनः एकीकरण और शान्ति स्थापित करने का कार्य थानेश्वर के राजा हर्षवर्धन (606-647ई.) ने किया था। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग अनेक वर्षों तक हर्षवर्धन के दरबार में रहा। हर्ष के राजदरबार में प्रसिद्ध विद्वान् महाकवि बाणभट्ट भी थे जिन्होंने ने कादम्बरी और हर्षचरितम् की रचना की थी। 647 ई. में सम्राट हर्षवर्धन की मृत्यु हो गई।
- प्राचीनकाल से ही भारतीय उपमहाद्वीप के दक्षिण तटीय क्षेत्र व्यापारिक केंद्र के रूप में समृद्धशाली रहे हैं। लगभग 2300 वर्ष पूर्व दक्षिण भारत के तीन शक्तिशाली राजाओं- चोल, चेर और पाड्यों का दक्षिण तटीय क्षेत्रों पर प्रभुत्व था। ये तीनों राजा अपने–अपने क्षेत्र के व्यापारिक केंद्र और व्यापारियों को सुरक्षा प्रदान करते थे। बदले में उन्हें व्यापारियों से प्रचुरमात्रा में बहुमूल्य वस्तुएँ उपहार स्वरूप प्राप्त होती थीं।
- उत्तर भारत में हर्ष के शासन काल के समय दक्षिण भारत में शक्तिशाली पल्लव एवं चालुक्य राजवंश का शासन था। चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय ने सम्राट हर्ष को दक्षिण में बढ़ने से रोका था। पल्लवों की राजधानी काञ्चिपुरम् तथा चालुक्यों की राजधानी एहोल थी।
- सभा, उर और नगरम् नामक स्थनीय संगठन होते थे। सभाएँ, उपसमितियों के माध्यम से सिंचाई, कृषि, मन्दिर एवं सड़क निर्माण सम्बन्धी कार्यों का देख-रेख करती थीं।
- सनातन (हिन्दू) देवी–देवताओं के प्रति नए दृष्टिकोण के विकास से भक्ति परम्परा का उदय हुआ। श्रीमद्भगवद्गीता में उल्लिखित भक्ति मार्ग ही भक्ति परम्परा का प्रचलित स्वरूप है। अनेक महान भक्तकवि जैसे– कबीर, सूर, तुलसी, मीरा आदि इसी भक्ति परम्परा की देन हैं। भक्ति मार्ग पर चलने वाले लोग ईश्वर के प्रति एवं विश्वास के साथ व्यक्तिगत पूजा पर बल देते हैं।

अध्याय–10

भारत- एक पारम्परिक समझ

- भारतीय संस्कृति है। प्राचीनता, अमरता, आध्यात्मिकता एवं कर्म प्रधानता आदि बहु आयामी भारतीय संस्कृति की महान विशेषता है। यूजीन एम. मकर ने भारतीय पारम्परिक संस्कृति को अपेक्षाकृत कठोर सामाजिक पदानुक्रम द्वारा परिभाषित किया है।
- सनातन संस्कृति का आधार संस्कार है। संस्कार विहीन मानव को पशुतुल्य माना गया है। हमारे ऋषियों–मनीषियों ने मानव जीवन को पवित्र और मर्यादित बनाने के लिए संस्कारों का विधान किया है। संस्कार मनुष्य के जन्म लेने से पूर्व आरम्भ होकर मृत्यु पर्यन्त तक चलने वाली प्रक्रिया है।
- व्यासस्मृति में लोक प्रचलित सोलह संस्कारों का वर्णन है- 1. गर्भाधान संस्कार 2. पुंसवन संस्कार 3. सीमन्तोन्नयन संस्कार 4. जातकर्म संस्कार 5. नामकरण संस्कार 6. निष्क्रमण संस्कार 7. अन्नप्राशन संस्कार 8. चूडाकर्म (मुण्डन) संस्कार 9. विद्यारम्भ संस्कार 10. कर्णवेध संस्कार 11. यज्ञोपवीत संस्कार 12. वेदारम्भ संस्कार 13. केशान्त संस्कार 14. समावर्तन संस्कार 15. विवाह संस्कार 16. अन्त्येष्टि संस्कार।
- भगवद्गीता के अनुसार परमात्मा के निमित्त किया गया कोई भी कर्म यज्ञ कहलाता है यथा- "दैवमेवापरे यज्ञम्" (गीता 4.25)। ऋग्वेद में कहा गया है "अग्निमीळे पुरहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्" अर्थात् अग्नि (यज्ञाग्नि) को पुरोहित कहा गया है। यज्ञ कर्म को मानव जीवन में कर्तव्य व नियम के अधीन माना गया है। यज्ञ में अग्नि को समर्पित की गई समस्त सामग्री वायु के माध्यम से संसार का कल्याण, वायुशोधन एवं आरोग्य वर्धन करता है। वैदिकवाङ्मय के अनुसार मुख्यत: यज्ञ पाँच प्रकार के होते हैं- 1. ब्रह्मयज्ञ 2. देवयज्ञ 3. पितृयज्ञ 4. वैश्वदेवयज्ञ 5. अतिथियज्ञ।
- सप्तऋषियों का उल्लेख वेद एवं अन्य धर्म ग्रन्थों में अनेक बार हुआ है। विष्णुपुराणानुसार- 'वशिष्ठकाश्यपो यात्रिर्जमदग्निस्सगौत्। विश्वामित्रभारद्वाजौ सप्त सप्तर्षयोभवन्॥ इस श्लोकानुसार वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि, जमदग्नि, गौतम, विश्वामित्र और भारद्वाज सप्त ऋषि हैं।
- देश के विभिन्न भागों में स्थित ऐसे पवित्र और रमणीक स्थान जो तप एवं साधना के कारण आज भी सकारात्मक ऊर्जा से युक्त हैं, उन्हें तीर्थस्थल कहते हैं।

- सप्तमोक्ष पुरियों से तात्पर्य भारत के वे सात नगर हैं जिन्हें मोक्षदायक कहा गया है। एक लोक प्रचलित श्लोकानुसार- अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, काञ्ची, अवन्तिका। पुरी द्वारावती चैव सप्तैते मोक्षदायिका:॥ अर्थात अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार (माया), काशी, काँचीपुरम्, अवन्तिका (उज्जैन) और द्वारिका ये सप्तमोक्ष पुरियाँ है।
- भारतीय धर्म ग्रन्थों में चार धाम- बद्रीनाथ, द्वारिका, जगन्नाथपुरी और रामेश्वरम् का उल्लेख हुआ है। आदि शङ्कराचार्य ने धार्मिक एवं सास्कृतिक एकीकरण के लिए चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना की। ये धाम और मठ सनातन धर्म की एकजुटता और व्यवस्था के प्रतीक हैं।
- शिव महापुराण के 42 वें अध्याय में द्वादश ज्योर्तिलिङ्गों का उल्लेख इस प्रकार आया है- **सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्। उज्जयिन्यां महाकालमोङ्करममलेश्वरम्॥ परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम्। सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने॥ वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमी तटे। हिमालये तु केदारङ्ग ध्रुष्णेशं च शिवालये॥ एतानि ज्योर्तिलिङ्गानि सायं प्रात: पठेन्नर:। सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥** अर्थात् सौराष्ट्र में सोमनाथ, श्रीशैल में मल्लिकार्जुन, उज्जैन में महाकाल, ओङ्कारेश्वर में ममलेश्वर, परली (बीड जिला) महाराष्ट्र में वैद्यनाथ ज्योर्तिलिङ्ग स्थित है। कुछ विद्वान् वैद्यनाथ ज्योर्तिलिङ्ग को झारखण्ड प्रान्त के संथाल परगना स्थित मानते है। डाकिनी क्षेत्र (पुणे के निकट) में भीमशङ्कर, सेतुबन्ध में रामेश्वरम्, दारूकवन (द्वारिकापुरी) में नागेश्वर, वाराणसी में विश्वेश्वर, नासिक में गोदावरी तट पर त्र्यम्बकेश्वर, हिमालय में केदारनाथ और शिवालय (औरंगाबाद) नामक स्थान में घृश्णेश्वर ज्योर्तिलिङ्ग स्थापित हैं। 52 शक्तिपीठ हैं। इनके अतिरिक्त पुष्कर तीर्थ, चित्रकूट धाम, काशी, हरिद्वार, उज्जैन, रामेश्वरम, गङ्गासागर आदि प्रमुख तीर्थ क्षेत्र हैं।
- त्यौहार एवं पर्व हमें हमारे पूर्वजों से धरोहर स्वरूप प्राप्त हुये हैं, जो भारतीय संस्कृति की पहचान हैं। ये जीवन में आनन्द व उल्लास के परिचायक हैं। पर्व व त्यौहारों से परस्पर सौहार्दता में भी वृद्धि होती है।
- समय की गणना को कालगणना कहा जाता है। वर्तमान में काल गणना की मुख्यतः दो विधियाँ प्रचलित है। प्रथम विधि- **पाश्चात्य कालगणना विधि**, जो ईस्वी सन् पर आधारित है। दूसरी विधि **भारतीय कालगणना विधि** है, जो सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र एवं अन्य खगोलीय माध्यमों पर आधारित है।
- पाश्चात्य कालगणना में एक दिन-रात को 24×60×60= 86400 सेकेण्ड में विभाजित किया गया है। भारतीय कालगणनानुसार एक दिन-रात = 3 अरब 28 करोड 5 लाख परमाणु होते हैं।

- कैलेण्डर एक प्रकार का अंग्रेजी कालदर्शक व्यवस्था है, जिसके माध्यम से वर्ष, माह, सप्ताह, दिन एवं वार की जानकारी प्राप्त होती है। इस पद्धति से बनने वाला कैलेण्डर ग्रेग्रेरियन कैलेण्डर का निर्माण 1482 ई. में पोप ग्रेगरी ने बनाया था। सामान्यतः एक अंग्रेजी वर्ष में 12 माह या 52 सप्ताह अर्थात् एक वर्ष में 365 दिन व 6 घण्टे होते है।
- पाश्चात्य कालगणना में सूक्ष्म इकाई सेकेण्ड है जबकी भारतीय कालगणना में सूक्ष्म इकाई परमाणु जो सेकेण्ड का 37, 968 वाँ खण्ड है। बृहत्तर कालगणना की दृष्टि से पाश्चात्य कालगणना सहस्त्राब्दी पर समाप्त होती है, जबकि भारतीय कालगणना अनन्त है।
- चार युगों के नाम- कलि युग (432000 वर्ष), द्वापर युग (864000 वर्ष), त्रेता युग (1296000 वर्ष), सत युग (1728000 वर्ष)।
- पृथिवी अपनी कक्षा में सूर्य की एक परिक्रमा $365\frac{1}{4}$ दिनों (एकवर्ष) में पूरी कर लेती है, जिसे **संवत्सर** कहा जाता है। एक संवत्सर में एक ऋतु चक्र पूर्ण होता है। सामान्यत: भारतीय संवत्सर चैत्र शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से प्रारम्भ होकर चैत्र कृष्णपक्ष अमावस्या तक पूर्ण होता है। भारतीय संवत्सर के प्रमुख अंग– दिन, सप्ताह, पक्ष, मास, ऋतुएं, अयन एवं वर्ष हैं।
- एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय की अवधि एक दिन कहलाता है। सात दिनों की अवधि (सोमवार से रविवार तक) को सप्ताह कहते है। पक्ष सामान्यतः 15 दिनों की अवधि होती है। एक माह में दो पक्ष (शुक्लपक्ष एवं कृष्णपक्ष) होते हैं। सामान्यतः एक मास में दिनों की संख्या 30 मानी जाती है।
- भारतीय कालगणना की दृष्टि से मुख्य रूप से पाँच प्रकार के वर्ष हैं- सौर वर्ष, चन्द्र वर्ष, सवन वर्ष, नक्षत्र वर्ष, बार्हस्पत्य वर्ष।
- वैदिक हिन्दू कालगणना की रीति से निर्मित पाञ्च अङ्गों वाले पारम्परिक कालदर्शक (कैलेण्डर) को पञ्चाङ्ग कहा जाता है। पञ्चाङ्ग के मुख्य रूप से 5 अङ्ग है- तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण।
- तिथि चन्द्रमास की कालावाधि में चन्द्रमा की गति एवं स्थिति के आधार पर किया गया दैनिक विभाजन है। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय के मध्य की 24 घण्टे की अवधि को वार कहते है, जिनका निर्धारण प्राचीन भारतीय खगोल शास्त्रियों द्वारा किया गया है।
- कृष्णयजुर्वेद के तैत्तरीय संहिता के अनुसार आकाश मण्डल में 27 नक्षत्र और अभिजित को मिलाकर कुल 28 नक्षत्र है।

- अन्तरिक्ष में सूर्य, चन्द्र एवं पृथिवी के बीच विशिष्ट दूरियों, दिशाओं एवं स्थितियों के विशिष्ट संयोगों को **योग** कहते है। भारतीय ज्योतिष के अनुसार योग की संख्या भी 27 मानी गई है।
- भारतीय ज्योतिष में करणों की संख्या ग्याराह बताई गई है- बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि (भद्रा), शकुनि, चतुष्पाद, नाग, किस्तुघ्न। विष्टि नामक करण भद्रा भी कहते है।
- **पञ्चाङ्ग की उपयोगिता एवं कार्य-**
    1. शुभ मुहूर्त ज्ञात करने व अशुभ का निवारण करने में।
    2. जीवन में धार्मिक उत्सवों, कृत्यों, पर्वो, व्रतों आदि का काल निर्धारण करने में।
    3. आकाशीय घटनाओं, संयोगो, ग्रहणों, ऋतुचक्रों आदि की अग्रिम जानकारी देकर मार्गदर्शन देने में।
    4. प्रतिदिन के व्यावहारिक उपयोग के लिये तिथियों, वारों, पक्षों, मासों, अयनों, ऋतुओं एवं वर्ष की सम्यक् जानकारी देने में।

अध्याय- 11

सरकार एवं लोकतन्त्र

- सरकार कुछ निश्चित लोगों का समूह होती है जो किसी निश्चित क्षेत्र (राज्य) में निश्चित समय के लिए, निश्चित पद्धति द्वारा शासन का सञ्चालन करती है। दो प्रकार की सरकारें होती हैं- राजतान्त्रिक सरकार एवं लोकतान्त्रिक सरकार।
- राजतान्त्रिक सरकार में समस्त निर्णायक शक्ति राजा या रानी के पास केन्द्रित होती है। राजा के पास सलहाकारों का एक समूह होता है जिसे मन्त्रिपरिषद् कहते हैं।
- लोकतान्त्रिक सरकार से आशय जनता द्वारा चुनी हुई, जनता के प्रति उत्तरदायी, जनता की सरकार से है। लोकतान्त्रिक व्यवस्था में राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को यह संवैधानिक अधिकार प्राप्त होता है कि वह वोट के माध्यम से सरकार चलाने के लिए अपने नेता का चुनाव करें।
- देश की शासन व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए सरकार तीन स्तरों- 1. स्थानीय स्तर 2. राज्य स्तर 3. राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करती है।
- शासन के तीन मुख्य अंग हैं–व्यवस्थापिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका। भारतीय संविधान में स्वतन्त्र न्यायपालिका के गठन का प्रावधान किया गया है।
- ऋग्वेद में 40 स्थानों पर, अथर्ववेद में 9 स्थानों पर, ब्राह्मण ग्रन्थों में अनेक स्थानों पर गणतन्त्र व राष्ट्र के अनेक सन्दर्भ मिलते हैं।
- सभा, समिति, विष, पञ्चजना जैसी लोकतन्त्रिक संस्थाओं के चुनावों की परम्परा भी अति प्राचीन है। ऋग्वेद के मन्त्र आ त्वाहार्षमन्तरेधि ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः। विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्ट्रमधि भ्रशत्॥ (10.173.1) अर्थात् हे राष्ट्र के अधिपति! मैं तुझे चुनकर लाया हूँ। तू सभा के अन्दर आ, मन को स्थिरता रख, चंचल मत बन, घबरा मत, तुझे सब प्रजा चाहे। तेरे द्वारा राज्य पतित नहीं हो।
- स्थानीय स्वशासन हेतु नगरों, ग्राम व प्रान्तों की पञ्चायतें होती थीं। इनसे भी उस चुने हुए राष्ट्राधिपति का अनुमोदन आवश्यक होता था। ये पञ्चायतें राष्ट्राधिपति को हटाने में भी सक्षम थीं।
- अथर्ववेद के एक मन्त्र में कहा गया है कि, **त्वां विशो वृणतां राज्याय त्वामिमाः प्रदिशः पञ्च देवीः। वर्ष्मन्राष्ट्रस्य ककुदि श्रयस्व ततो न उग्रो वि भजा वसूनि॥** (3.4.2) अर्थात् देश में बसने वाली प्रजाएँ तुझे चुनें। ग्राम या नगर या प्रादेशिक परिषदें विद्वानों की बनी हुई उत्तम मार्गदर्शक, दिव्य पञ्चदेवी (पञ्चायतें)

तेरा वरण करें अर्थात् अनुमोदन करें। तत्पश्चात तू उग्र तेजस्वी व प्रभावशाली दण्ड को न्याय बल के साथ संभाल और हमको जीवनोपयोगी वनों एवं अधिकारों का न्याय पूर्वक समान रूप से विभाजन कर।

- स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत में वयस्क मताधिकार के अन्तर्गत प्रत्येक नागरिक को जो 18 वर्ष या उससे अधिक आयु वाले हैं (61 वें संविधान संशोधन 1989 ई.) को संवैधानिक रूप से मतदान का अधिकार प्राप्त हैं।
- विश्व में सर्वप्रथम 1893 ई. में न्यूजीलैंड ने महिलाओं को मतदान का अधिकार दिया था। संयुक्त राज्य अमरीका में 1920 ई. तथा युनाइटेड किंगडम में 1928 ई. में महिलाओं को मतदान का अधिकार प्राप्त हुआ था।
- सशक्त लोकतन्त्र निर्माण की दिशा में भारत सरकार ने जन प्रतिनिधियों को जनहित के कार्यों में समर्थ न पाने की दशा में भारतीय नागरिकों द्वारा उन्हें वापस बुलाने का अधिकार (राईट टू रिकॉल) स्थानीय स्तर पर प्रदान किया है। वर्तमान में यह कानून उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, बिहार, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और हिमाचल प्रदेश राज्यों में पञ्चायत स्तर पर लागू किया गया है।
- निर्वाचन प्रक्रिया में अपनी पसन्द का उम्मीदवार न होने की दशा में निर्वाचन में प्रत्युक्त ई.वी.एम. में नोटा का भी विकल्प दिया गया है। जनता, सरकार के कार्यों के प्रति अपनी सहमति एवं असहमति विभिन्न संचार माध्यमों जैसे–समाचारपत्रों, टेलीविजन आदि के द्वारा भागीदारी करती है।
- लोकतान्त्रिक सरकारों का मुख्य उद्देश्य संविधान द्वारा प्रदत्त सभी लोगों के लिए न्याय एवं सभी क्षेत्रों में अवसरों की समानता आदि को प्रदान करना है। सरकार द्वारा दिशा में बड़े कार्य किये जा रहे हैं, जैसे- सरकार द्वारा अस्पृश्यता, लैङ्गिक भेद जैसी बुराइयों को दूर करने के लिए, सर्वशिक्षा, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा हेतु संवैधानिक एवं कानूनी व्यवस्थाएं दी गई हैं।

अध्याय- 12

पञ्चायती राज व्यवस्था

- पञ्चायती राजव्यवस्था भारत की शासन व्यवस्था का प्राचीनकाल से ही अंग रही है। वैदिक वाङ्मय के अनेक मन्त्रों से इस बात की पुष्टि होती है। वैदिक संस्कृति में सभा व समिति नामक संस्था ग्राम विकास के कार्य करती थीं। ग्राम के मुखिया को ग्रामिणी कहा जाता था।
- अथर्ववेद के एक मन्त्र में कहा गया है- **ये राजानो राजकृत: सूता ग्रामण्यसूता ग्रामण्यश्च ये।** (3.5.7) इस मन्त्र में प्रयुक्त शब्द **ग्रामण्यश्च** का अर्थ ग्राम का नेतृत्व करने वाला है।
- मनुस्मृति में एक गाँव, दस गाँव, सौ गाँव एवं हजार गाँवों के संगठन का वर्णन मिलता है, जो वर्तमान की ग्राम पञ्चायत, ब्लाक पञ्चायत और जिला पञ्चायत जैसी ही थीं।
- पञ्चायती राज व्यवस्था द्वारा किसी क्षेत्र अथवा समुदाय विशेष से सम्बन्ध रखने वाले लोगों का चहुँमुखी विकास सम्भव होता है। पञ्चायती राज व्यवस्था को स्थानीय स्वशासन व्यवस्था भी कहा जाता है।
- पञ्चायती राज व्यवस्था का उल्लेख संविधान के अनुच्छेद- 40 में किया गया है, जिसमें ग्राम पञ्चायतों के गठन का उल्लेख है।
- बलवन्त राय मेहता समिति की रिपोर्ट के आधार पर भारत में त्रिस्तरीय पञ्चायती राज व्यवस्था 2 अक्टुबर, 1959 को पं. जवाहरलाल नेहरू द्वारा राजस्थान के नागौर जिले में पहली बार लागू की गई।
- थुंगन समिति की रिपोर्ट के आधार पर 24 अप्रैल, 1993 को संविधान के 73 वें और 74 वें संशोधनों द्वारा पञ्चायती राज व्यवस्था में अभूतपूर्व परिवर्तन किए गये। जिससे ग्रामीण व शहरी लोगों की शासन व्यवस्था में अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित हुई।
- पञ्चायती राज व्यवस्था को तीन स्तरों में विभाजित किया गया है- 1. जिला स्तर पर जिला पञ्चायत (परिषद) 2. विकास खण्ड (ब्लॉक) स्तर पर क्षेत्र पञ्चायत 3. ग्रामीण स्तर पर ग्राम पञ्चायत।
- भारत सरकार ने पञ्चायत स्तर पर योजनाओं के उचित प्रबन्धन एवं क्रियान्वन के लिये 2004 में पञ्चायतीराज मन्त्रालय की स्थापना की है।
- जिला पञ्चायत के मुखिया को जिला पञ्चायत अध्यक्ष कहा जाता है। जिला पञ्चायत अध्यक्ष का चुनाव जिले के वार्ड सदस्यों द्वारा किया जाता है।

- किसी भी जिले के राज्यसभा एवं लोकसभा सदस्य और विधायक भी जिला पञ्चायत के पदेन सदस्य होते हैं। इनके अतिरिक्त मुख्य कार्य-पालन अधिकारी की नियुक्ति भी की जाती है, जो जिला पञ्चायत के निर्णयों को लागू करवाने का कार्य करता है।
- विकास खण्ड की क्षेत्र पञ्चायत में उस क्षेत्र की सभी ग्राम पञ्चायतों को शामिल किया जाता है। क्षेत्र के सदस्यों का गठन उस क्षेत्र के मतदाताओं के द्वारा ही किया जाता है तत्पश्चात् चुने हुए सदस्यों में से अध्यक्ष (प्रमुख) एवं उपाध्यक्ष (उपप्रमुख) को चुना जाता है। क्षेत्र पञ्चायत में सरकार द्वारा नियुक्त सर्वोच्च पदाधिकारी को प्रखण्ड विकास अधिकारी (BDO) कहा जाता है।
- क्षेत्र पञ्चायत को राज्यों में अलग-अलग नामों से जानते हैं जैसे- राजस्थान में पञ्चायत समिति, आन्ध्रप्रदेश में मण्डल प्रजापरिषद, गुजरात में तालुका पञ्चायत, कर्नाटक में मण्डल पञ्चायत तथा उत्तर प्रदेश में प्रखण्ड पञ्चायत, मध्यप्रदेश में जनपद पञ्चायत आदि।
- ग्राम पञ्चायत का गठन कम से कम 1000 व्यक्ति की आबादी होने पर किया जाता है। किसी गांव की आबादी 1000 से कम होने पर आस-पास के गाँवों को जोड़कर ग्राम पञ्चायत का गठन किया जाता है।
- ग्राम पञ्चायत के अन्तर्गत आने वाले गाँव विभिन्न वार्डों में विभाजित होते हैं। प्रत्येक वार्ड की जनता अपने प्रतिनिधि का चुनाव करती है, जिन्हें पञ्च कहा जाता है। ग्राम पञ्चायत का प्रमुख सरपञ्च या प्रधान होता है, जो पञ्चायत की होने वाली बैठकों की अध्यक्षता करता है। ग्राम पञ्चायत का कार्यकाल 5 वर्ष का होता है। ग्राम पञ्चायत के सभी कार्यों एवं निर्णयों का लेखा-जोखा, पञ्चायत सचिव रखता है।

अध्याय- 13

ग्रामीण एवं नगरीय प्रशासन तथा आजीविका के साधन

- हमारे देश भारत में लगभग 65% जनसंख्या गाँवों में निवास करती है और यहाँ लगभग 6 लाख से अधिक गाँव हैं।
- गाँवों में बिजली, जल, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि व्यवस्थाओं के साथ-साथ भूमि के दस्तावेजों का रख-रखाव तथा ग्रामवासियों के विविध प्रकार के विवादों को हल करने के लिए एक प्रशासनिक ढाँचा होता है। प्रशासन से आशय शासन के विभिन्न पहलुओं के विकास और उसे क्रियान्वित करने की प्रक्रिया से है।
- प्रशासन का जो भाग जनकल्याण अथवा जनता की हित के लिए होता है, उसे लोक प्रशासन कहते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में जन सुविधाओं की दृष्टि से प्रशासन के अनेक पहलू हैं, जैसे- सड़क, नाली, बांध, पेयजल, आदि की सुविधाएँ प्रदान करना है।
- शान्ति एवं कानून व्यवस्था की स्थापना के लिए प्राथमिक रूप से एक पुलिस थाना अथवा पुलिस चौकी होती है। थाने के प्रमुख को थानाध्यक्ष तथा चौकी के प्रमुख को चौकी प्रभारी कहा जाता है। थाना में किसी भी विवाद से सम्बन्धित प्राथमिकी दर्ज कराई जा सकती है इसे अंग्रेजी भाषा में फर्स्ट इन्फॉर्मेशन रिपोर्ट (F.I.R.) कहते हैं।
- राजस्व वसूली का प्राथमिक अधिकारी पटवारी कहलाता है। पटवारी का कार्य भूमि एवं भू-उत्पादों के नये-पुराने समस्त अभिलेखों को सुरक्षित रखना भी है। जिला स्तर पर राजस्व वसूली तन्त्र का मुखिया कलेक्टर (जिलाधीश) होता है।
- भू-अभिलेखों को खसरा-खतौनी भी कहते हैं। आज भारत के अधिकांश हिस्सों में भूमि के आभिलेखों को कम्प्यूटरीकृत कर दिया गया है। जिसके कारण अभिलेख निर्विवादित एवं आमजन तक पहुँच गये।
- जन सुविधा से तात्पर्य जनता की उन मूलभूत आवश्यकताओं से है जो उनके जीवन के लिए आवश्यक है। भारतीय संविधान में जन सुविधा के रूप में शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, आवास, बिजली, सार्वजनिक परिवहन प्रणाली आदि को मानव जीवन के अधिकार का हिस्सा माना गया है।
- भारतीय संविधान के नीति निर्देशक तत्त्वों में अनुच्छेद- 45 में, 6 से 14 वर्ष तक की आयु के सभी बालकों को निःशुल्क अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था करने का निर्देश दिया गया है।
- 2002 में 86 वाँ संविधान संशोधन अधिनियम को संसद द्वारा पारित कर मूल अधिकारों में अनु. 21 (क) को जोड़कर अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा को मूल अधिकार का दर्जा दिया गया।

- शिक्षा अधिकार विधेयक)RTE), संसद में 4 अगस्त, 2009 को पारित हुआ था तथा 1 अप्रैल, 2010 से शिक्षा का अधिकार कानून लागू किया गया है।
- भारत में प्रथम रेल मुम्बई से ठाणे के मध्य 16 अप्रैल 1853 ई. चलाई गई थी।
- भारत में मेट्रो रेल का प्रारम्भ 24 अक्टुबर 1984 को हुआ था।
- दिल्ली, मुम्बई, बैंग्लौर, चेन्नई, जयपुर, नोएडा, हैदराबाद, अहमदाबाद, लखनऊ, इन्दौर आदि शहरों में भी मेट्रो रेल सेवा शुरू हो चुकी है। अब ओला एवं ऊबर जैसी टैक्सी कैब सेवा कम्पनियाँ समुचित दरों पर मोबाइल एप के माध्यम से लोगों को स्थानीय यातायात की सुविधाएँ प्रदान कर रही हैं।
- स्वच्छता सुविधा की दृष्टि से वर्ष 2021-22 में नये घरों के लिए कुल 7.16 लाख व्यक्तिगत घरेलू शौचालय और 19061 सामुदायिक स्वच्छता परिसरों का निर्माण किया गया।
- सुलभ इन्टरनेशनल संस्था की स्थापना 1974 में डा. विन्देश्वर पाठक ने की थी। इससे स्वच्छता सुविधा का उपयोग आमजन द्वारा किया जा रहा है।
- भारत सरकार द्वारा देश में स्वच्छता को प्रोत्साहित करने हेतु 2 अक्टूबर, 2014 से स्वच्छ भारत मिशन प्रारम्भ किया है। इस मिशन द्वारा अक्टूबर, 2019 तक सम्पूर्ण देश में स्वच्छता सुनिश्चित करने का लक्ष्य है। इस कार्यक्रम में केन्द्र एवं राज्य का 75:25 प्रतिशत का वित्तीय योगदान है।
- गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सुविधाएँ नि:शुल्क प्रदान करने के लिए भारत सरकार ने 23 सितम्बर, 2018 को आयुष्मान भारत योजना प्रधानमन्त्री जन आरोग्य योजना (AB-PMJAY) प्रारम्भ की है।
- जनसुविधा के रूप में विद्युत वर्तमान में लगभग 90% से भी अधिक गाँवों में विद्युतीकरण किया जा चुका है। सौर ऊर्जा, पवन चक्कियों एवं बायो गैस संयंत्रों के माध्यम से भी विद्युत आपूर्ति की व्यवस्था सुनिश्चित की जा रही है।
- हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम- 2005 में बड़ा संशोधन किया गया। इस अधिनियम के तहत पैतृक सम्पदा में पुत्रों के समान पुत्रियों की भी हिस्सेदारी सुनिश्चित की गई है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका से आशय ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध वृत्ति या रोजगार से है। ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका का मुख्य साधन सामान्यतः कृषि ही है। कृषि के लिए भूमि की आवश्यकता होती है, परन्तु भूमि का असमान वितरण एक बड़ी समस्या है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषकों की तीन श्रेणियाँ हैं- 1. बड़े किसान 2. छोटे किसान 3. भूमिहीन किसान।

- इस श्रेणी के किसान देशभर में लगभग 20 प्रतिशत ही हैं। इन किसानों के पास पर्याप्त मात्रा में भूमि होती है जिन पर मजदूर कार्य करते है।
- देश भर में कृषि क्षेत्र में संलग्न छोटे किसान लगभग 30 से 40 प्रतिशत हैं। इस श्रेणी के अधिकांश किसान अपने खेतों में स्वयं श्रमकर अन्नोपार्जन करते हैं। छोटे किसानों के पास अधिकांशतः अत्याधुनिक कृषि उपकरणों का अभाव होता है।
- भारत के गाँवों में भूमिहीन किसानों की जनसंख्या अधिक हैं। इस वर्ग के कृषक परिवार अन्य कृषकों के खेतों में मजदूरी करते हैं। वर्तमान रोजगार सृजन की दिशा में सरकार द्वारा किये गए उपायों द्वारा ऐसे किसानों के लिए वर्ष भर में रोजगार के अवसर में वृद्धि होने के साथ-साथ आस-पास के गाँवों में मनरेगा जैसी ग्रामीण रोजगार योजनाओं के अन्तर्गत काम मिल रहा है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि जगत से जुड़ा व्यवसाय पशुपालन भी है। पशुपालक कृषक दुग्ध का उत्पादन कर अधिकांशत: सहकारी समितियों को और कुछ किसान आस-पास के शहरी क्षेत्रों में बेच देते हैं। इससे आय के स्रोत में वृद्धि हुई है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका के अन्य साधन के रूप में सूक्ष्म पूँजी वाले रोजगार देखने को मिलने लगे हैं, जैसे- किराना स्टोर, जनरल स्टोर, मेडिकल स्टोर, बढ़ईगिरी, लघु स्तर पर गुड़ बनाने के कारखाने आदि सूक्ष्म पूँजी वाले रोजगार हैं।
- गरीबी रेखा से नीचे जीवन निर्वाह कर रहे लोगों (BPL- Below Poverty Line) के लिए प्रधानमन्त्री ग्रामीण आवास योजना के तहत लोगों को आवास प्रदान किए जा रहे हैं।
- फ्लैगशिप मिशन के रूप में भारत सरकार ने 2015 में प्रधानमन्त्री आवास योजना मिशन आरम्भ किया। इस मिशन के अन्तर्गत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में निवास कर रहे परिवारों को पक्के आवास उपलब्ध कराने का लक्ष्य है। 2022 ई. तक सबके लिए आवास सरकार की प्राथमिकता में है।
- नगरीय स्थानीय स्वशासन को मुख्यत: चार श्रेणियों में विभाजित किया गया है- नगर निगम, नगर परिषद, नगरपालिका और छावनी क्षेत्र।
- नगरों को वार्डों में विभक्त किया गया है। वार्ड के मतदाता वार्ड मेंम्बर (पार्षद) का चुनाव करतें हैं। ये पार्षद अपने में से नगरपालिका/नगरमहापालिका/नगर निगम के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष का चुनाव करते हैं। नगर निगम के मुखिया को महापौर (मेयर) कहा जाता है।

- नगर निगम/नगरपालिका में प्रशासकीय प्रबन्धन तथा कार्यों के कुशल संचालन के लिए एक कमिश्नर स्तर के अधिकारी और अन्य सहायक कर्मचारियों की नियुक्ति सरकार द्वारा की जाती है।
- नगरवासियों के हित में विभिन्न कार्यक्रमों को चलाने के लिए नगर निगम/नगर-पालिकाओं में पार्षद समितियाँ जैसे- सफाई समिति, शिक्षा समिति, स्वास्थ्य समिति, कर समिति, जल समिति आदि।
- नगरनिगम/नगरपालिका के प्रमुख कार्य- नगर में जल आपूर्ति, स्वास्थ्य सुविधाएं, सड़क एवं गलियों में प्रकाश, जल निकासी, अग्नि शमन, बाजार व्यवस्था, जन्म एवं मृत्यु सम्बन्धी प्रमाणन एवं अभिलेखीय संरक्षण, कचरा निस्तारण आदि का प्रबन्धन करना है।
- स्मार्ट सिटीज मिशन की शुरुआत 2015 में हुई थी। इस मिशन का लक्ष्य ऐसे शहरों को तैयार करना है, जो अपने नागरिकों को बुनियादी अवसंरचना और बेहतर जीवनशैली उपलब्ध कराते हैं। इसके तहत अखिल भारतीय स्तर पर चार चरणों में 100 शहरों का चयन किया गया।
- भारत सरकार द्वारा 'द नेशनल हेरिटेज सिटी डेवलपमेंट एण्ड आग्मेंटेशन योजना' 2015 में प्रारम्भ की गई है। इसका लक्ष्य सम्मिलित तौर पर शहरी योजना के अन्तर्गत, विरासत का संरक्षण करना है, ताकि प्रत्येक हेरिटेज सिटी का मूल चरित्र सुरक्षित रह सके।
- 'द नेशनल हेरिटेज सिटी डेवलपमेंट एण्ड आग्मेंटेशन योजना' के अन्तर्गत भारत के 12 शहरों का चयन किया गया जिनके नाम हैं- अजमेर, अमरावती, अमृतसर, बादामी, द्वारका, गया, काञ्चीपुरम, मथुरा, पुरी, वाराणसी, वेलङ्कन्नी और वारङ्गल।
- शहरों में रोजगार क्षेत्रों का विभाजन निम्न प्रकार किया जा सकता है- 1. सरकारी सेवा क्षेत्र 2. निजी सेवा क्षेत्र 3. सेवा प्रदाता कम्पनियाँ 4. दिहाड़ी मजदूर 5. दुकानदार 6. फेरी/ रेहडीवालें।
- सरकारी सेवा क्षेत्र में आजीविका सीमित होती है। इसके अंतर्गत केंद्र एवं राज्य सरकारों के लिए कार्य करने प्रशासनिक अधिकारी, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी आते हैं। सरकारी सेवकों को सेवा के बदले निर्धारित वेतन, अवकाश एवं स्वास्थ्य सुविधाएं आदि प्राप्त होती हैं।
- निजी क्षेत्र में दो तरह के कर्मचारी होते हैं- स्थायी कर्मचारी और अस्थायी कर्मचारी।
- निजी सेवा क्षेत्र में स्थाई कर्मचारियों को तो प्रायः अच्छा वेतन एवं सुविधाएं प्राप्त होती हैं, परन्तु अस्थायी कर्मचारियों का सेवाकाल निश्चित होता है और उन्हें काम के अनुसार पारिश्रमिक प्रदान किया जाता है।

- शहरी क्षेत्रों में आजीविका की दृष्टि से सेवा प्रदाता संस्थाएँ/लोग कार्यरत हैं। यह सिर्फ बाजार से सामग्री उपभोक्ता तक पहुँचाते हैं। जैसे- कोरियर सेवा, ट्यूशन, डॉक्टर आदि।
- दिहाड़ी मजदूर गाड़ियों पर माल ढ़ोने-उतारने, भवन निर्माण वाले स्थानों पर ईट, गिट्टी, बालू, सीमेन्ट एवं अन्य निर्माण सामग्रियों को पहुँचाने आदि का कार्य करते हैं, जिसके लिए वे प्रतिदिन के हिसाब से मजदूरी प्राप्त करते हैं।
- आजीविका के क्षेत्र में दुकानों की बड़ी भूमिका है। बड़ी-बड़ी कंपनियों ने उपभोक्ता की आवश्यकता के अनुसार सामग्रियों की एक श्रृङ्खला के रूप में भी दुकानें खोल रखी हैं। बड़ी दुकानों के प्रबन्धन एवं रख-रखाव के लिए प्रबंधक एवं कर्मचारी भी होते हैं।
- फेरी वाले या रेहडी वाले अस्थायी दुकानें, जो हमें प्रायः सड़कों के किनारे, साइकिल अथवा हाथ-ठेला गाड़ी पर देखने को मिलती है। सरकार ऐसे दुकानदारों की समस्या पर सहृदयता से विचार कर उनकी समस्याओं के निस्तारण के लिए प्रयासशील है।
- अन्तार्राष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुसार, "**वह सुरक्षा जो समाज, उचित संगठनों के माध्यम से अपने सदस्यों के साथ घटित होने वाली घटनाओं और जोखिम से बचाव के लिए प्रस्तुत करता है।**" ये जोखिम- रोग, मातृत्व, अयोग्यता, वृद्धावस्था तथा मृत्यु हैं।

अध्याय- 14

भारत में विविधता

- सामाजिक परिप्रेक्ष्य में विविधता का तात्पर्य ऐसे समाज से है जहाँ विविध भाषा-भाषी, भौगोलिक और सांस्कृतिक रूप से भिन्न लोग किसी स्थान पर शान्ति और सौहार्द्र पूर्वक निवास करते हैं। विविधता समाजिक जीवन को समृद्ध बनाता है।
- किसी भी क्षेत्र की विविधता पर उसके भाषाई, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भौगोलिक कारकों का प्रभाव होता है। भारत में प्राचीनकाल से ही अनेक रूपों में विविधता विद्यमान है। इसकी तुलना हम उद्यान में अनेक प्रकार रंग-बिरंगे पुष्पों-पत्तियों से सुसज्जित दृश्य से कर सकते हैं।
- लद्दाख भारत के जम्मू-कश्मीर प्रान्त के पूर्वी पहाड़ियों पर बसा शीत प्रधान रेगिस्तानी क्षेत्र है जो वर्ष के अधिकांश समय में बर्फ से ढका होता है।
- लद्दाख के लोग भेड़ एवं बकरियों से उत्पादित ऊन से बहुमूल्य पश्मीना शॉल बनाते है। पशुपालन की दृष्टि से गाय, भेड़, बकरी, याक प्रमुख पालतू जीव है। तिब्बती साहित्य 'केसर सागा' लद्दाख में प्रचलित कविता संग्रह है।
- केरल भारत के दक्षिण पश्चिमी भाग में स्थित समुद्र तटीय राज्य है। जिसके एक और समुद्र और दूसरी और पहाड़ियाँ हैं। यहाँ काली मिर्च, लौङ्ग, इलायची आदि विविध मसाले बहुतायत से उत्पादित होते हैं। इस कारण प्राचीन काल से ही यह क्षेत्र व्यापार का केन्द्र रहा है।
- लगभग 2000 वर्ष पूर्व इसाई धर्म प्रचारक संत थामस एवं अरब देशों से इस्लामिक व्यापारी यहाँ आकर बसे। चीन के व्यापारी भी भारत से व्यापार के लिए केवल पूर्व से ही आते रहे हैं। सन् 1497 में पुर्तगाली व्यापारी वास्कोडिगामा ने पश्चिम से भारत आने का समुद्री मार्ग खोजा था।
- केरल का पारम्परिक परिधान कसाव 'मुंडू' है। पुरुष लुंगी या केली भी पहनते हैं, जो एक अनौपचारिक पोशाक के रूप में काम करता है। यहाँ की पारम्परिक क्षेत्रीय भाषा मलयालम है।
- हमारे देश में रङ्ग-रूप, वेष-भूषा, खान-पान, बोली-भाषा, त्यौहारों आदि में भी क्षेत्रीय एवं भौगोलिक विविधताएँ के साथ सम्पूर्ण भारत प्राचीनकाल से ही एकता के सूत्र में पिरोया हुआ है।सम्पूर्ण क्षेत्रीय संस्कृतियाँ मिलकर एक विशाल भारतीय संस्कृति का निर्माण करती हैं। देश के पूर्व से पश्चिम एवं उत्तर से दक्षिण तक भारतीय संस्कृति में एकत्व दिखता है। एकता के कारण सभी प्राणियों में मानवता एवं परस्पर सौहार्द झलकता है।

- ऋग्वेद में आया है- **संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।** अर्थात् साथ मिलकर चलो, साथ मिलकर रहो एवं हम सभी के मन एक हों। इस प्रकार विविधता या अनेकता हमें विकसित करने का एक माध्यम एवं प्रकृति द्वारा प्रदत्त बहुमूल्य उपहार है।
- हमारी राष्ट्रीय एकता को दर्शाने वाले प्रतीक हैं- राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा है। इसका निर्माण पिंगली वैंकया ने सर्वप्रथम 1921 ई. में किया था। इसे 22 अगस्त, 1947 ई. को राष्ट्र ध्वज के रूप में अंगीकृत किया गया।
- भारत का राष्ट्रगान जन गण मन.... के रचयिता रवीन्द्रनाथ टैगोर हैं। इसे 24 जनवरी, 1950 ई. को अंगीकृत किया गया। इसके गायन की अवधि 52 सेकेण्ड है। राष्ट्रगान का हमें सही उच्चारण करना चाहिए तथा इसके गाने के समय हमें सावधान मुद्रा में खड़ा हो जाना चाहिए।
- भारत का राष्ट्रगीत वन्दे मातरम् .... के रचयिता वकिंमचन्द्र चटर्जी हैं। यह गीत उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'आनन्दमठ' से लिया गया है। इसे 24 जनवरी, 1950 ई. को अंगीकृत किया गया।
- भारत का ध्येय वाक्य सत्यमेव जयते है। इसे मुण्डकोपनिषद् से लिया गया है।
- 31 अक्टुबर, 2015 को सरदार वल्लभ भाई के 140 वें जन्म दिवस को राष्ट्रीय एकता दिवस के नाम पर मनाने की घोषणा के साथ इस योजना की शुरुआत की गई। इसका उद्देश्य वर्तमान में सांस्कृतिक सम्बधों के माध्यम से देश के विभिन्न भागों में एकता, शांति एवं सद्भावना को बढ़ावा देना है।
- सन्त रामानुजाचार्य की 1000 वीं जयन्ती पर निर्मित स्टैच्यू ऑफ इक्वेलिटी (हैदराबाद) का अनावरण कर प्रधानमन्त्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 5 फरवरी, 2022 को राष्ट्र को समर्पित किया है। संत रविदास की 645 वीं जयन्ती 16 फरवरी, 2022 को मनाई गई।

परिशिष्ट - राज्य, उनकी राजधानी, जिलों की संख्या, क्षेत्रफल एवं जनसंख्या

क्रं.	राज्य	राजधानी	जिलों की संख्या	क्षेत्रफल वर्ग कि.मी. में	जनसंख्या
1.	आंध्र प्रदेश	हैदराबाद	26	2,75,060	8,46,53,533
2.	अरुणाचल प्रदेश	ईटानगर	19	83,743	13,82,611
3.	असम	दिसपुर	35	78,438	3,11,69,272
4.	बिहार	पटना	38	94,163	10,38,04,637
5.	छत्तीसगढ़	रायपुर	32	1,36,034	2,55,40,196
6.	गोवा	पणजी	02	3,702	14,57,723
7.	गुजरात	गाँधी नगर	35	1,96,024	6,03,83,628
8.	हरियाणा	चंडीगढ़	22	44,212	2,53,53,081
9.	हिमाचल प्रदेश	शिमला	12	55,673	68,56,509
10.	झारखण्ड	राँची	24	79,714	3,29,66,238
11.	कर्नाटक	बंगलोर	30	1,91,791	6,11,30,704
12.	केरल	तिरूवनंथपुरम्	14	38,863	3,33,87,677
13.	मध्य प्रदेश	भोपाल	50	3,08,000	7,25,97,565
14.	महाराष्ट्र	मुंबई	36	3,07,713	11,23,72,972
15.	मणिपुर	इम्फाल	09	22,327	27,21,756
16.	मेघालय	शिलांग	11	22,327	29,64,007
17.	मिजोरम	आइजौल	08	21,081	10,91,014
18.	नागालैंड	कोहिमा	12	16,579	19,80,602
19.	ओडिशा	भुवनेश्वर	30	1,55,707	4,19,47,358
20.	पंजाब	चंडीगढ़	23	50,362	2,77,04,236
21.	राजस्थान	जयपुर	33	3,42,239	6,86,21,012
22.	सिक्किम	गंगटोक	04	7,096	6,07,688
23.	तमिलनाडु	चेन्नई	38	1,30,058	7,21,38,958
24.	त्रिपुरा	अगरतला	08	10,49,169	36,71,032
25.	उत्तराखण्ड	देहरादून	13	53,484	1,01,16,752
26.	उत्तरप्रदेश	लखनऊ	75	2,38,566	19,95,81,477
27.	पश्चिम बङ्गाल	कोलकाता	23	88,752	9,13,47,736
28.	तेलंगाना	हैदराबाद	33	1,14,840	3,51,93,978

क्रं.	केन्द्र शासित राज्य	राजधानी	जिलों की संख्या	क्षेत्रफल वर्ग कि.मी. में	जनसंख्या
1.	अंडमान और निकोबार द्वीप समूह	पोर्ट ब्लेयर	3	8,249	3,79,944
2.	चंडीगढ़	चंडीगढ़	1	114	10,54,686
3.	दादर और नागर हवेली दमन और दीव	दमन	3	603	5,85,764
4.	जम्मू और कश्मीर	श्रीनगर	20	2,22,236	1,25,00,000
5.	राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली	दिल्ली	9	1,483	1,67,53,235
6.	लक्षद्वीप	कवरत्ती	1	32	64,429
7.	पुदुच्चेरी	पुदुच्चेरी	4	492	12,44,464
8.	लद्दाख	लेह	2	1,66,698	2,74,289

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

द्वारा सञ्चालित एवं प्रस्तावित राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण, पो. ऑ. जवासिया, उज्जैन - ४५६००६ (म.प्र.)

Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in